ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०७६ अप्रैल २०१९

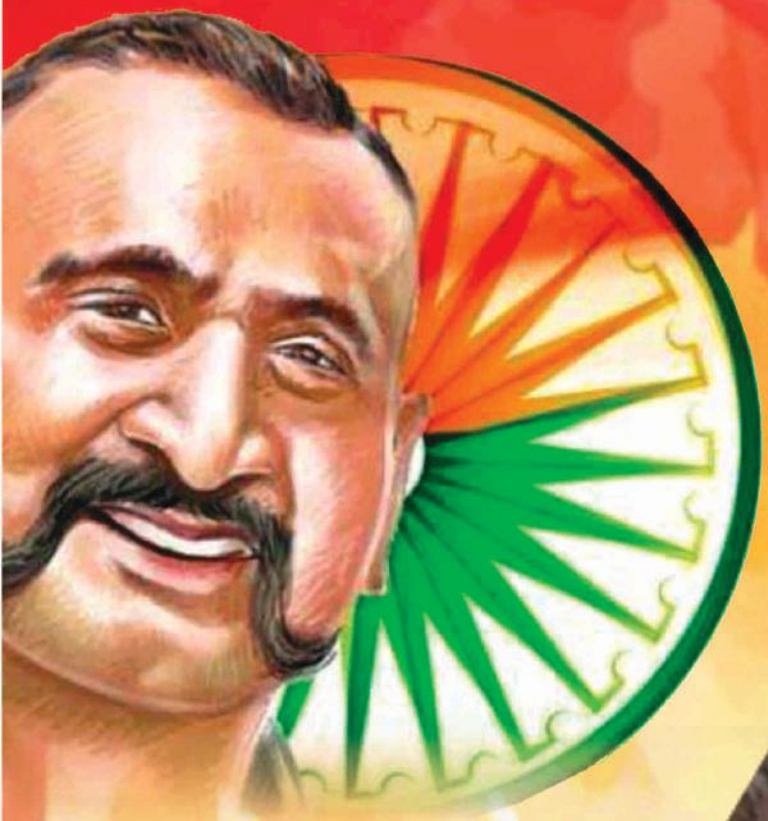

अभिनंदन नव संवत् का
अभिनंदन नव भारत का

₹ २०

हर घर से 'अभिनंदन' निकलेंगे भारत के दुश्मन सुन लेना

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

प्रिलिम्स–2019 के लिये

करेंट अफेयर्स क्रैश कोर्स

ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों में उपलब्ध
कुल 30-35 कक्षाएँ (लगभग 100 घंटे)

आरंभ

8 अप्रैल, प्रात: 7:30 बजे	14 अप्रैल
क्लासरूम कार्यक्रम	ऑनलाइन कार्यक्रम

अभी तक का ट्रैक रिकॉर्ड है कि इस क्रैश कोर्स से प्रिलिम्स में पूछे जाने वाले करेंट अफेयर्स के 90% + प्रश्न आसानी से कवर होते हैं। आप भी इस अवसर का लाभ उठाइये और प्रिलिम्स के परिणाम में अपनी दावेदारी सुनिश्चित कीजिये।

ऑनलाइन प्रोग्राम में एडमिशन लेने के लिये आज ही
गूगल प्ले स्टोर से हमारा एंड्रॉएड एप Drishti Video Classes इंस्टॉल करें।

अधिक जानकारी के लिये फोन करें : 8448485521 या विज़िट करें : www.drishtiIAS.com

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन + सीसैट (प्रा.+ मुख्य परीक्षा)	(G.S + CSAT :- 39 Booklets)
हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)	(Hindi Ltr.:- 13 Booklets)
इतिहास (वैकल्पिक विषय)	(History :-12 Booklets)
दर्शन शास्त्र (वैकल्पिक विषय)	(Philosophy :- 4 Booklets)

स्टेट PCS सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS)	(G.S + CSAT :- 43 Booklets)
मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS)	(G.S + CSAT :- 36 Booklets)
राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS)	(G.S :- 34 Booklets)
उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC)	(G.S + CSAT :- 36 Booklets)
बिहार पी.सी.एस. (BPSC)	(G.S :- 25 Booklets)

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें–8448485519, 8448485520, 87501-87501
641, Ist Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9 :-: E-mail: online@groupdrishti.com

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

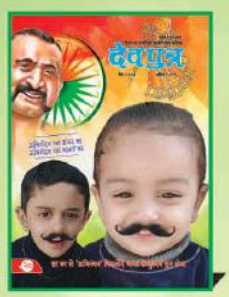

चैत्र २०७६ ▪ वर्ष ३९
अप्रैल २०१९ ▪ अंक१०

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC- SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

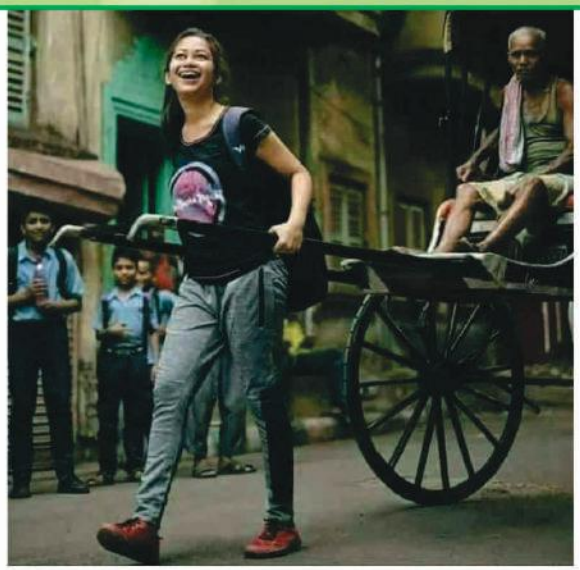

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

विगत दिनों एक फोटो समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा उसके बाद न्यू मीडिया पर खूब देखा गया। यूं चित्र दिखने में तो सामान्य सा था एक सुन्दर सी बिटिया कोलकाता में चलने वाले हाथ से खींचने वाले रिक्शा को चला रही है। रिक्शे में बैठे वयोवृद्ध व्यक्ति वेशभूषा से रिक्शा खींचने वाले लग रहे हैं। पहले लगा कोई बालिका हँसी मजाक में यह कौतुक कर रही होगी पर जब चित्र का विवरण पढ़ा तो मैं भी भाव विभोर हुए बिना न रह सका।

उस बेटी ने कोलकाता में ही अपने रिक्शा चालक पिता के संघर्षपूर्ण जीवन के साथ अध्ययन करते हुए IAS की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। अपनी इतनी बड़ी प्रसन्नता को लोगों के साथ बाँटने और अपने पिताजी को इस पूरे सम्मान का श्रेय देने के लिए उस बेटी ने अपने पिता को उनके ही रिक्शा में बैठाकर कोलकाता की सड़कों पर उस रिक्शा को खींचा।

बच्चो! हमारे माता-पिता अपनी सुविधाओं से समझौते कर हमारे लिए संसाधन जुटाते हैं। कई बार बच्चों को फिल्मों और टी.वी. धारावाहिक के 'डायलॉगबाजी' से प्रभावित होकर अपने माता-पिता से यह कहते हुए देखता हूँ कि - "आपने हमारे लिए किया ही क्या है?" तो मन व्यथित हो जाता है।

क्या इस बिटिया से हम कुछ प्रेरणा ले सकते हैं? इसी चित्र में सड़क पर खड़े कुछ विद्यार्थी बच्चे दीदी को देखकर तालियाँ बजा रहे हैं, प्रसन्न हो रहे हैं। आओ हम सब भी एक बार इन होनहार से अधिक विनम्र बेटी के लिए तालियाँ बजाते हैं।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- नववर्ष प्रतियोगिता - मोनिका अग्रवाल ०५
- जननी जन्मभूमिश्च - डॉ. विकास दवे १०
- नन्हा डाल्फिन - प्रज्ञा गौतम १४
- मैना की सीख - जया मोहन १८
- सीख - रेखा लोढ़ा 'स्मित' २९
- उदारमन आशा - पवन चौहान ३८

कविता

- नवसंवत्सर आया - रमेशचन्द्र पंत ०६
- नये वर्ष के खेल नए - प्रभुदयाल श्रीवास्तव ०७
- सब्जियां - कुसुम अग्रवाल १२
- जलेबी का जलवा - पद्मा चौगाँवकर २८
- गीत नए लिख जाएगी - सुकीर्ति भटनागर ३१
- तरह तरह की कविताएँ - डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ३५
- बच्चों की बात - आचार्य बलवंत ४१
- सड़क के नियम - अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' ४५
- मीठी सौगात - डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी ५०

लघुकथा

- मुनिया और रीना - मीरा जैन १७

प्रसंग

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर - हरनारायण महाराज १३
- समय का सदुपयोग - साँवलाराम नामा २६

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

आलेख

- संसार ने विक्रम संवत् - नरेन्द्र देवांगन ०८

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १६
- गाथा वीर शिवाजी की (२६) - २४
- आपकी पाती - ३०
- हमारे राज्य वृक्ष : आम - डॉ. परशुराम शुक्ल ३४
- चुटकुले - ४१
- पुस्तक परिचय - ४७

चित्रकथा

- पिताजी क्यों नहीं... - देवांशु वत्स ३३
- मूर्ख कौन? - संकेत गोस्वामी ४२
- पढ़ने का उपाय - देवांशु वत्स ४६

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!
देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है-
खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**
बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**
खाता क्रमांक - **53003592502**
IFSC- SBIN0030359
राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।
नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।
उदाहरण के लिए -
सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -
"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

नववर्ष प्रतियोगिता

कहानी : मोनिका अग्रवाल

सुंदर वन में नए वर्ष गुढ़ी पड़वा पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का पता चलते ही सारे जानवर वहाँ प्रवेश पत्र लेने पहुँचे। चीकू खरगोश, कट्टो गिलहरी, चीं चीं चिड़िया, गुटर गूं कबूतर, मीकू बंदर और शेर सिंह सभी बहुत उत्साहित थे। शेर सिंह नहीं चाहता था कि मीकू बंदर भी इस प्रतियोगिता में भाग ले क्योंकि वह जानता था कि अगर मीकू ने चित्रकारी की तो वही प्रथम आएगा। अब तक जब भी सुंदर वन में प्रतियोगिता हुई थी, तो शेर सिंह मीकू को नहीं हरा पाया। इसी कारण वह मीकू बंदर से ईर्ष्या करता था।

जैसे ही लोमड़ी दीदी ने सब बच्चों को नववर्ष प्रतियोगिता का आवेदन पत्र भरने के लिए दिया, शेर सिंह ने क्रोध में ''देखता हूँ मीकू के बच्चे! तू कैसे प्रतियोगिता में भाग लेता है'' कहकर उस का आवेदन पत्र फाड़ दिया और उसके सारे पेंसिल रंग नाली में फेंक दिए। यह देखकर मीकू बंदर दुखी होकर घर चला गया। सब जानवरों ने लोमड़ी दीदी को सारी बात बताई। लोमड़ी दीदी को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने चीं चीं चिड़िया को एक नया आवेदन पत्र दिया और कहा ''मीकू को दे देना। मैं शीघ्र ही उससे मिलने जाऊँगी...'' और शेरसिंह अब इस प्रतियोगिता में नहीं बैठेगा।'' अगले दिन वह मीकू बंदर से मिलने के लिए उसके घर गई। उनको आया देख मीकू को बहुत आश्चर्य हुआ। मीकू बंदर उस समय पत्ती और फूलों को पीसकर अपने लिए रंग बना रहा था। लोमड़ी को देखकर बोला, ''दीदी आप!''

''हाँ मैं! तुमसे मिलने आई हूँ। तुम यह क्या कर रहे थे?'' मैं रंग बना रहा था क्योंकि अब इतना समय नहीं है कि मैं शहर जाकर रंग लेकर आऊँ!''

''कोई जरूरत नहीं है तुम प्रतियोगिता की तैयारी करो। मैं तुम्हारे लिए रंग लेकर आई हूँ तुम हमेशा के जैसे प्रतियोगिता में बैठोगे भी और जीतोगे भी। मैंने शेर सिंह को प्रतियोगिता से बाहर कर दिया है। तुम चिंता मत करो।''

यह सुनकर मीकू बोला, ''नहीं दीदी! प्रतियोगिता सभी के लिए है मुझे कोई परेशानी नहीं है। आप शेर सिंह को ऐसी सजा नहीं दो। उसने नासमझी में ऐसा किया है। अगर आप उसे प्रतियोगिता में नहीं बैठने देंगी तो उससे उसका क्रोध और बढ़ेगा शांत नहीं होगा। मैं उससे रूठा नहीं हूँ।''

लोमड़ी दीदी ने मीकू बंदर के कहने पर शेरसिंह को भी प्रतियोगिता में बैठने दिया। प्रतियोगिता का परिणाम देखकर सभी खुश हो गए। मीकू बंदर हमेशा की तरह सब जानवरों में प्रथम आया। उसे सब बच्चों के प्यारे चाचा सहरू गज ने सोने की चमकती हुई ट्रॉफी इनाम में दी। फिर उन्होंने शेर सिंह को बुलाया और समझाया, ''शेर सिंह! जानते हो आज तुम

प्रतियोगिता में किसके कारण से बैठ पाए हो?''

''नहीं'', शेरसिंह ने चौक कर ना में सिर हिलाया।

''शेर सिंह! तुम मीकू बंदर के कारण से प्रतियोगिता में बैठ पाए हो। अगर मीकू बंदर नहीं कहता तो लोमड़ी दीदी ने तो तुम्हें प्रतियोगिता से बाहर कर दिया था। तुमने जो कुछ भी किया वह बहुत अनुचित था। क्या मीकू बंदर को प्रतियोगिता में न बैठने देने से तुम प्रतियोगिता जीत जाते?''

शेरसिंह का सर लज्जा से नीचे झुक गया। ''शेरसिंह प्रतियोगिता जीती जाती है, ईमानदारी से। अगर तुम सच्चे अर्थों में यह प्रतियोगिता जीतना चाहते हो तो इसके लिए सच्ची लगन के साथ परिश्रम करो। किसी से चिढ़ो मत। अगर परिश्रम करोगे तो अच्छा परिणाम आएगा। अभी भी समय है थोड़ा सा संभल जाओ। हम तुम्हें एक अवसर और देंगे। अगर तुमने मन से प्रतियोगिता में भाग लिया और सच्ची लगन से चित्रकारी की तो तुम्हें भी, नववर्ष का पुरस्कार मिल सकता है। तुम यह क्यों नही समझते, यह पुरस्कार तो है ही तुम लोगों के लिए?''

''मुझे अपने इस कार्य पर दुःख है। मैं आगे से ऐसा कोई काम नहीं करूँगा मुझे क्षमा कर दीजिए।''

''शेरसिंह! हर किसी में कोई ना कोई सृजनात्मकता छुपी हुई होती है। बस आवश्यकता है तो उसको पहचानने की। अगर तुम इन व्यर्थ की बातों में समय ना गंवाओ तो, यह प्रतियोगिता तुम भी जीत सकते हो।''

शेरसिंह को अपनी करनी पर बहुत पछतावा हुआ। उसने मीकू बंदर से मॉफी मांगी और कहा, ''मैं वचन देता हूँ कि अब किसी का मन नहीं दुखाऊंगा।''

शेरसिंह और मीकू बंदर अब अच्छे मित्र बन गए थे। शेरसिंह अगली प्रतियोगिता के लिए मीकू बंदर की सहायता से पूरी लगन से परिश्रम करने लगा उसको प्रथम जो आना था।

● मुरादाबाद (उ.प्र.)

नवसंवत्सर आया

कविता : रमेशचन्द्र पन्त

नवसंवत्सर आया देखो,
धरा खिल उठी।
कोई भी अब नहीं शीत से
डरा हुआ है,
एक नई ऊर्जा से अब तो
भरा हुआ है।
रंग-बिरंगे फूलों से है,
धरा सज उठी।
धरकर रूप नया यह धरती
सजी हुई है,
चेहरों पर मुस्कान सभी के
खिली हुई है।
थी पतझड़ में सोई अब यह,
धरा जग उठी।

● द्वाराहाट (उत्तराखण्ड)

नये वर्ष के खेल नये

कविता : प्रभुदयाल श्रीवास्तव

नये वर्ष में क्यों न खेलें,
खेल सभी हम नये-नये

नये खेल में हम सब मिलकर,
कूड़ा करकट बीनें।
नया खेल हो ऐसा जिसमें,
स्वच्छ जल मिले पीने।
आओ तरीके साफ सफाई,
के नित ढूंढें नये-नये।
नये खेल में बंद करें हम,
रोज सवारी करना।
नये खेल में हर दिन सीखें,
पैदल भी कुछ चलना।
धुंआ, विष भरी गैसें कम हों,
हो उपाय कुछ नये-नये।

नये खेल हों, काम आयें जो,
पर्यावरण बचाने।
कैसे बढ़ता रोज प्रदूषण,
हम बच्चे भी जानें।
नये खेल में सभी खिलाड़ी,
पौधे रोपें नये-नये।

नये खेल में तकओं की हम,
रोज रखें निगरानी।
पेड़ काटना हो जाये अब,
बिसरी हुई कहानी।
इन्हें बचाने के उद्यम हों,
सभी ओर से नये-नये।

• छिंदवाड़ा (म.प्र.)

।। वर्ष प्रतिपदा पर विशेष ।।

संसार ने विक्रम संवत् से ही कैलेण्डर बनाया

आलेखः नरेन्द्र देवांगन

कालगणना भारत ने ही संसार को सिखाई है और इसका केन्द्र रही है उज्जयिनी यानी उज्जैन। संवत् समय गणना का भारतीय मापदंड है। भारत में अनेक प्रचलित संवत् रहे हैं लेकिन मुख्य हैं दो–विक्रम संवत् और शक संवत्। सनातन संस्कृति में आस्था रखने वाले लोग युगाब्द को भी बड़ा महत्वपूर्ण मानते हैं। भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय संवत् यदि कोई है तो वह विक्रम संवत् ही है। चैत्र प्रतिपदा २०१९ के दिन हम विक्रम संवत् के २०७६वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। यह अवसर है कि हम इस परम्परा को जानें और अपने अतीत की गौरवगाथा को भी।

वर्तमान के ज्यादातर दिनदर्शक (कैलेंडर) विक्रम संवत् से प्रभावित हैं। विक्रम संवत् कई अर्थों में अपने से पूर्ववर्ती संवत् से श्रेष्ठ है क्योंकि इसका आधार पूर्णतः वैज्ञानिक रहा है। बारह महीने का एक वर्ष और सात दिन का एक सप्ताह हो यह शुरुआत विक्रम संवत् से ही हुई। इस पद्धति में महीने का गणित सूर्य और चंद्रमा की गति के आधार पर रखा जाता है। बारह राशियाँ बारह सौर मास हैं। जिस दिन सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी दिन की संक्रांति होती है। पूर्णिमा के दिन, चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है उसी आधार पर महीनों का नामकरण हुआ है। चंद्र वर्ष सौर वर्ष से ११ दिन ३घटी ४८ पल छोटा है। इसलिए हर ३ वर्ष में इसमें एक महीना जोड़ दिया जाता है जिसे अधिक मास कहा जाता है।

विक्रम संवत् मालवगण के सामूहिक प्रयत्नों द्वारा गर्दभिल्ल के पुत्र विक्रम के नेतृत्व में उस समय विदेशी माने जाने वाले शकों की पराजय के स्मारक के रूप में प्रचलित हुआ था। ऐसा जान पड़ता है कि इस तरह यह राष्ट्रीयता की भावना के प्रसार का प्रतीक भी बना। भारतीयों के देशप्रेम और विदेशी आक्रांताओं से टक्कर की भावना को बनाए रखने के उद्देश्य से ही जनता ने सदैव इसका प्रयोग किया। भारतीय सम्राटों ने भी संवत् का प्रयोग इसलिए किया क्योंकि इसमें स्वदेश प्रेम था।

प्रारंभिक काल में यह कृतसंवत्, उसके बाद मालवसंवत् और फिर विक्रम संवत् नाम से ख्यात हुआ। विद्वानों ने सामान्यतः कृत संवत् को विक्रम संवत् का पूर्ववर्ती माना है। कृत संवत् को लेकर कुछ संदेह भी है मगर ज्यादातर कृत एवं मालव संवत् एक ही कहे गए हैं, क्योंकि दोनों पूर्वी राजस्थान एवं पश्चिमी मालवा में प्रयोग में लाए गए हैं। इस विक्रम संवत् के रूप में ही इसकी भारतीय ख्याति रही है।

गणना के आधार पर विक्रम संवत् पंचांग ग्रेगेरियन कैलेंडर से ५६.७ यानी ५७ साल आगे था। प्राचीन समय में नया संवत् चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य की समस्त प्रजा को ऋण मुक्त करना आवश्यक था। राजा विक्रमादित्य ने इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवगण के नाम से नया संवत् चलाया गया।

भारतीय कालगणना के अनुसार वसंत ऋतु और चैत्र प्रतिपदा की तिथि प्राचीन काल से सृष्टि निर्माण की तिथि भी रही है। विक्रमादित्य ने भारत

की इन सभी कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर संवत् की परम्परा आरंभ की।

विक्रमादित्य ने विद्वानों की गणना के आधार पर विक्रम संवत् का आरंभ किया।

आरंभ कब हुआ – अब से २०७५ वर्ष पहले यानी ५७ ईसा पूर्व में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से।

अलग क्यों – विक्रम संवत् में तिथियों में बदलाव गणित की दृष्टि से अत्यंत सुगम और सर्वथा ठीक गणना कर निश्चित किए गए। इस संवत् के महीनों के नाम विदेशी संवतों की भांति देवता, मनुष्य या संख्यावाचक कृत्रिम नाम नहीं हैं। यही बात तिथि तथा अंश (दिनांक) के संबंध में भी है कि वे भी सूर्य चंद्र की गति पर आश्रित हैं। यह संवत् अपने अंग–उपांगों के साथ पूर्णतः वैज्ञानिक है।

पौराणिक महत्व – मान्यता है कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण किया था, इसलिए इस पावन तिथि को 'नवसंवत्सर' के रूप में मनाया जाता है, हिन्दू नववर्ष के रूप में।

ऐतिहासिक महत्ता – चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने प्रजा के संपूर्ण ऋण को चुकाकर विक्रम संवत् की शुरुआत की थी। वस्तुतः विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था और उस विजय की स्मृति में विक्रम संवत् चला था।

चलन – गुजरात एवं उत्तरी भारत में विक्रम संवत्, दक्षिण भारत में शक संवत् और कश्मीर में लौकिक संवत् का प्रयोग होता है।

शक संवत् भारत का राष्ट्रीय संवत् – शक संवत् का आरंभ ७८ई. कनिष्क ने किया था। जब भारत ने आजादी प्राप्त की तो भारत सरकार ने इसी शक संवत् में मामूली फेरबदल के साथ इसे राष्ट्रीय संवत् के रूप में घोषित कर दिया। राष्ट्रीय संवत् का नववर्ष २२ मार्च से आरम्भ होता है जबकि लीप ईयर में यह २१ मार्च होता है। यह संवत् सूर्य के मेष राशि में प्रवेश से शुरु होता है।

जनवरी नहीं चैत्र प्रतिपदा पर नववर्ष – १ जनवरी को सारे संसार में मनाया जाने वाला नववर्ष ग्रेगेरियन कैलेंडर पर आधारित है। ग्रेगेरियन कैलेंडर की शुरुआत रोमन कैलेंडर से हुई मगर पारम्परिक रोम कैलेंडर में भी नववर्ष एक मार्च को आरंभ होता है। विश्वभर में चलन में आ चुके ग्रेगोरियन कैलेंडर को पोप ग्रेगोरी अष्टम ने १५८२ में तैयार किया था। इसमें लीप ईयर का प्रावधान भी था और इसकी मूल प्रेरणा संभवतः विक्रम संवत् से ही ली गई थी क्योंकि वह सबसे वैज्ञानिक जो था। भारत में ईसवी संवत् का प्रचलन अंग्रेजों ने १७५२ में किया।

इस्लामिक कैलेंडर और हिजरी सन् – इस्लामिक कैलेंडर हिजरी साल पर ही आधारित है। हिजरी सन् की शुरुआत मोहर्रम माह के पहले दिन से होती है। इसकी शुरुआत ६२२ ईसवी में हुई थी। हजरत मोहम्मद जब मक्का से निकलकर मदीना में बस गए तो इसे हिजरत कहा गया। जिस दिन वे मक्का से मदीना आए उस दिन हिजरी कैलेंडर शुरू हुआ। हिजरी कैलेंडर के बारे में एक रोचक बात यह है कि इसमें चंद्रमा की घटती–बढ़ती चाल के अनुसार दिनों का संयोजन नहीं किया गया है, लिहाजा इसके महीने हर वर्ष करीब १० दिन पीछे खिसकते हैं।

● **खरोरा (छ.ग.)**

।। श्रीरामनवमीः चैत्र शुक्ल नवमी पर विशेष।।

जननी जन्मभूमिश्च

कहानीः डॉ. विकास दवे

रात्रि का अंतिम प्रहर बीत रहा था। बड़े भैया राम की निद्रा आज थोड़ी जल्दी खुल गई। वे उठकर बैठे ही थे कि बाहर से छोटे भैया लक्ष्मण की आवाज सुनाई दी– ''आज ब्रह्म मुहूर्त के पूर्व ही निद्रा खुल गई भैया?'' राम मुस्कराते हुए कुटिया से बाहर आए तो लक्ष्मण ने तुरंत आगे बढकर उनके चरण स्पर्श किये। राम ने स्नेह से गले लगाते हुए उन्हें आशीष दिया– ''सदैव प्रसन्न और स्वस्थ रहो।''

लक्ष्मण बोले– ''भैया! स्वस्थ तो मुझे रहना ही है। भैया–भाभी की सेवा का जो व्रत मैंने धारण किया है उसमें तनिक भी ढील न हो इसके लिए मेरा स्वस्थ रहना आवश्यक है और आपकी सेवा करके प्रसन्नता तो मुझे यूं ही मिलती चली जाएगी।''

''लेकिन लखन! तुम पूरी रात्रि धनुष–बाण लिए बिना सोए बाहर द्वार पर बैठे रहते हो क्या यह तुम्हारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव नहीं डालेगा?'' राम स्नेह से लक्ष्मण के सिर पर हाथ फिराते हुए कह रहे थे।

''भैया! आप तो जानते ही हैं, हम दोनों बचपन में जब गुरुवर विश्वामित्र जी के साथ जंगल में अध्ययन कर रहे थे तब वे कहा करते थे विद्यार्थी जीवन में निद्रा पर संयम ब्रह्मचर्य की प्रथम सीढ़ी है।''

''हाँ लक्ष्मण! लेकिन तुम भूल रहो हो तब तुम ब्रह्मचारी थे। अब तुम्हारा विवाह हो चुका है और तुम अब विद्यार्थी भी नहीं रहे।'' राम ने हँसते हुए यह कह तो दिया लेकिन उन्हें अपनी भूल का आभास भी हो गया। लक्ष्मण हठ पूर्वक भैया–भाभी के साथ वन में चले आए थे। उनकी पत्नी उर्मिला को अयोध्या ही छोड़कर वे यहाँ वन में तपस्वी की तरह संयमित जीवन जी रहे थे। इतना ही नहीं दृढ़तापूर्वक उन्होंने चौदह वर्ष के लिए निद्रा का भी त्याग कर दिया था। इस समय उर्मिला

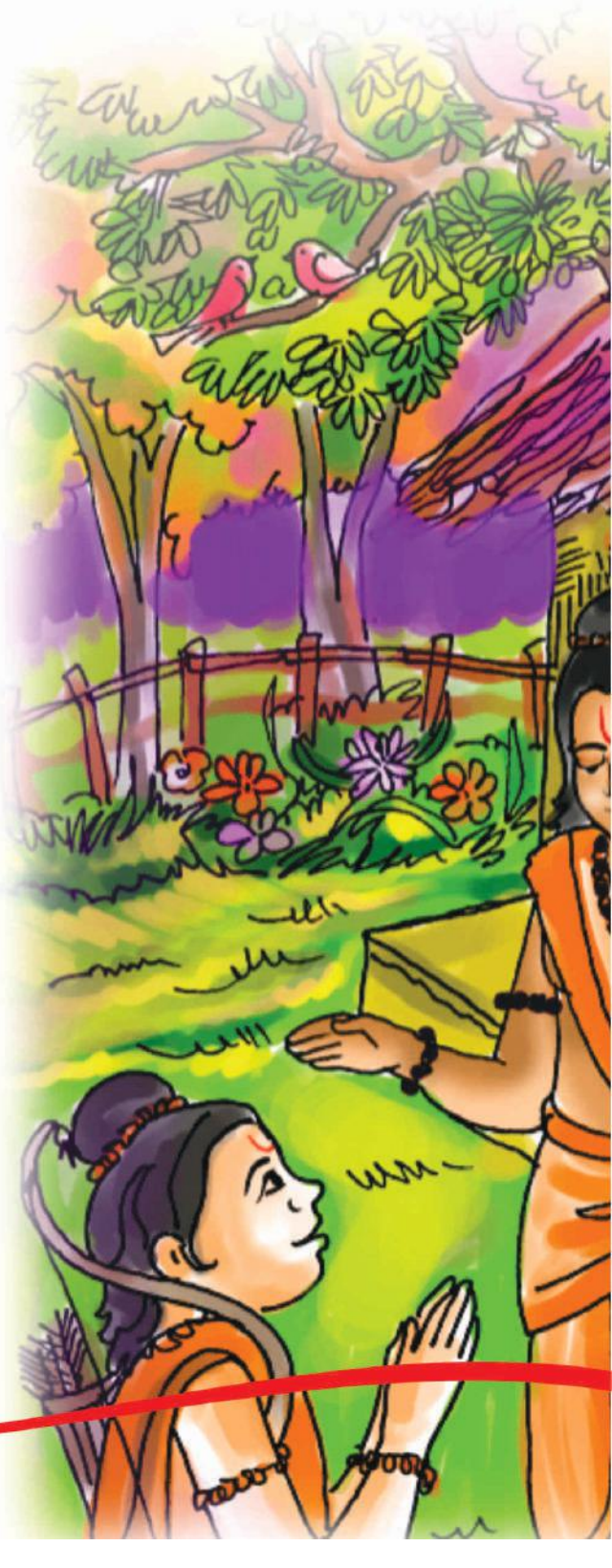

का स्मरण कराना राम को अपनी भूल ही लगी।

लक्ष्मण हँसकर विनम्रता से बोले– ''भैया! संयम क्या केवल ब्रह्मचर्य का ही अनिवार्य अंग है? मुझे याद है हम जब छोटे–छोटे थे तब आप हमेशा मुझे, भरत और शत्रुघ्न को समझाया करते थे कि अपने हिस्से का लड्डू या मिठाई दूसरों के साथ बाँटना, दूसरों के भोजन प्रारंभ करने तक हमें भी रुके रहना ऐसी छोटी बातें भी हमें संयम और सदाचार सिखाती हैं।''

राम को इस कष्टपूर्ण समय में अचानक बचपन की यादें स्मरण करना मरुस्थल में ठंडे पानी की बौछार सा लगा। फिर भी वे कृत्रिम क्रोध प्रकट कर बोले– ''वह बचपन की बातें थीं। आज तुम्हारे स्वास्थ्य की बात एक युवा शरीर की आवश्यकता है। पौष्टिक भोजन और पूरी निद्रा तुम्हारी आज की आवश्यकता है लखन!''

लक्ष्मण भैया के हृदय की गहराई से उमड़ रहे स्नेह के उस झरने का आनंद लेते हुए बोले– ''भैया क्या आपको लगता है मेरा स्वास्थ्य के प्रति ध्यान कम है? आप दोनों मुझे काम तो कुछ करने नहीं देते फालतु रहता हूँ। वन में उपलब्ध पौष्टिक कंद मूल, फल और कच्ची हरी सब्जियों का आनंद तो मैं ही सबसे अधिक लेता हूँ। फिर ब्रह्ममुहूर्त तो पूरा ही योग, आसन, ध्यान और प्राणायाम करने में बीतता है मेरा। कुलदेवता सूर्य भगवान के दर्शन सहित मैं बचपन से सूर्य नमस्कार प्रतिदिन लगाता हूँ। अब आप ही बताएँ मैं अस्वस्थ हो सकता हूँ कभी? जहाँ तक १४ वर्ष तक निद्रा नहीं लेने के मेरे प्रण का सवाल है यह भी मैं योग और ध्यान के बल पर ही कर पा रहा हूँ। इससे मुझे कोई हानि नहीं हो सकेगी। आप बिल्कुल चिन्ता न करें।''

राम ने एक स्नेह दृष्टि छोटे भैया के हष्ट–पुष्ट शरीर पर डाली और मन ही मन लक्ष्मण की बात से संतुष्ट भी हुए लेकिन प्रकट में बोले– ''ठीक है– ठीक है चलो अब सीता भी जाग गई है। तुम शीघ्र ही प्रातः के अल्पाहार निर्माण हेतु सूखी लकड़ियाँ संग्रह कर लाओ।''

राम मन ही मन सोच रहे थे– ''जिस राष्ट्र में लक्ष्मण जैसे संयमित, सदाचारी युवा हों उस राष्ट्र को विश्व की कोई शक्ति चुनौती नहीं दे सकती। प्रातः मंत्रों के साथ वे बुदबुदाने लगे– ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादऽपि गरियसी....।''

● **इन्दौर (म.प्र.)**

सब्जियां

कविता : कुसुम अग्रवाल

खाओ ताजा सभी सब्जियाँ।
कई गुणों से भरी सब्जियाँ।।

गाजर, मिर्ची और टमाटर
मैथी, पालक लाओ जाकर
कच्ची खाओ, भले पकाओ
पकने से ना डरी सब्जियाँ।

चटनी, सूप, सलाद बनाओ
पीसो, काटो, घिसो सुखाओ
सभी तरह से साथ निभाती
भोजन की सहचरी सब्जियाँ

गाजर लाल, हरी है गोभी
शिमला मिर्च, लाल है बो भी
रंग-रंगीली कितनी सुंदर
हैं प्रकृति की परी सब्जियाँ।

ये पौधों की जड़ हो सकती
ये फल, फूल तना या पत्ती
मिट्टी, धूप, हवा, पानी ने
मिलकर पैदा करी सब्जियाँ।

मुन्ना-मुन्नी हँस कर खाते
अम्मा को ना कभी सताते
स्वस्थ और सुंदर कर देंगी
करती जादूगरी सब्जियाँ।।

● कांकरोली (राज.)

।। डॉ. अम्बेडकर जयंती पर विशेष ।।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा-प्रेम

प्रसंग : हरनारायण महाराज

छात्र जीवन में लगन व मेहनत से किया गया विद्याअध्ययन व्यक्ति को जीवन की सर्वोच्च ऊँचाइयों पर पहुँचा देता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन का है।

भीमराव ने सन् १९०९ में एलीफिंसन कॉलेज से इण्टर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी बीच उनके पिताजी का निधन हो गया। उन दिनों अच्छी शिक्षा के लिए विदेश जाना पड़ता था। पिताजी की मृत्यु तथा पैसों की कमी के कारण उनके लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना असंभव हो गया था। लेकिन भीम निराश नहीं हुए, उन्होंने अपनी सूझबूझ से इस असंभव काम को भी संभव बना लिया। उन्होंने कुछ ऐसे उदार दानशील तथा शिक्षाप्रेमी धनी लोगों की सूची तैयार की, जिनसे मदद की आशा की जा सकती थी। इस सूची के अनुसार उन्होंने लोगों से सहायता मांगना शुरु किया। अनेक लोगों द्वारा इनकार करने पर भी उन्होंने अथक प्रयास जारी रखा। अंत में बड़ौदा नरेश सयाजी राव ने उनकी जिज्ञासा व प्रतिभा को देखकर उन्हें छात्रवृत्ति देना स्वीकार कर लिया। इसी छात्रवृत्ति के सहारे उन्होंने १९१२ में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

सयाजीराव ने भीमराव को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अमेरिका भेजा। न्यूयार्क विश्वविद्यालय से भीमराव ने १९१४ में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। राजनीति शास्त्र व अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए भीमराव लंदन गए। लंदन से ही उन्होंने लॉ की डिग्री हासिल की।

भीमराव पुस्तक प्रेमी, अध्ययनशील तथा ज्ञानपिपासु व्यक्ति थे। उन्हें पुस्तकों से इतना अधिक लगाव था कि उन्होंने अपने छात्रजीवन में ही दैनिक खर्चों में कटौती करके लगभग दो हजार पुस्तकें खरीद ली थीं। उनका मानना था कि **जिस प्रकार शरीर की स्वास्थ्य रक्षा व वृद्धि के लिए नियमित रूप से भोजन जरूरी है ठीक उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा व वृद्धि के लिए नियमित रूप से अच्छी पुस्तकों का पढ़ना भी जरूरी है। हम जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ेंगे उतने ही अधिक विद्वान तथा प्रगतिवान बनेंगे।**

अम्बेडकर पढ़ने में इतने तल्लीन हो जाते थे कि उन्हें खाने-पीने आदि की भी सुध नहीं रहती थी। उनका कथन है- **पुस्तकें ज्ञानवृद्धि व मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन है।**

अपने अध्ययन के फलस्वरूप अम्बेडकर जी भारत सरकार के कानून मंत्री बने, और बने भारतीय संविधान के निर्माता।

अम्बेडकर जी ने अपनी बौद्धिक कुशलता से एक ऐसा अनूठा संविधान बनाया कि जिसे देखकर देश-विदेश के सभी राजनीतिक विशेषज्ञ आश्चर्यचकित हो गए। अम्बेडकर जी द्वारा रचित भारतीय संविधान की गणना विश्व के श्रेष्ठतम संविधानों में की जाती है।

यदि अम्बेडकर जी साधनों के अभावों में इण्टर तक पढ़कर रह जाते, उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते तो सफलता के उस उच्च शिखर पर कभी न पहुँच पाते जिस पर वे पहुँच गए। वे मानते थे कि शिक्षा ही मानव समाज का उद्धार कर सकती है।

● **झांसी (उ.प्र.)**

नन्हा डॉल्फिन

कहानी : प्रज्ञा गौतम

यमुना के उस तट पर लोगों की भीड़–भाड़ रहती। पूजा करके लोग खाने–पीने की चीजें और प्रसाद नदी में फेंक देते। झुंड की झुंड मछलियाँ खाने–पीने की चीजों की ओर लपकती। डॉल्फिनें उन मछलियों को पकड़ने के लिए प्रायः किनारे पर आ जाती। पिछले कुछ वर्षों में नदी का पानी बहुत उथला हो गया था। प्रदूषण के कारण मछलियाँ मरने लगी थीं। उस छोटे से डॉल्फिन समूह (पाड) पर भी संकट आ गया था।

उस वर्ष अगस्त माह में अच्छी वर्षा हुई थी। बाँधों के द्वार खुल गए थे। यह सही समय था नये स्थान पर जाने का। नदी में पानी का प्रवाह अच्छा था। चार डॉल्फिनों का वह समूह कई किलोमीटर तैरकर चंबल में आ गया। उस जगह चंबल का घाट चौड़ा था और मनुष्यों का अधिक आवागमन भी नहीं था। यहाँ मछलियाँ और अन्य जलीय जीवों की प्रचुरता थी।

झुंड में एक नर, दो मादा और एक शिशु डॉल्फिन थे। मादा डॉल्फिन मुँह से अजीब सी ध्वनि निकालते हुए शिकार का पीछा करती, साथ–साथ उसका शिशु भी रहता। उस दिन डॉल्फिन शिशु मछली का पीछा करते हुए ज्यादा ही आगे निकल गया। उसने मछली को पकड़कर जैसे ही नीचे की तरफ गोता लगाया उसने स्वयं को किसी चीज में उलझा हुआ पाया।

और उसको पानी से बाहर खींच लिया गया। उसकी पूँछ और फ्लीपर्स जाल में फँसे हुए थे। वह बाहर निकलने के लिए छटपटाया। हवा उसके शरीर को सुखा रही थी। असहाय होकर उसने माँ–माँ पुकारना शुरु कर दिया।

महावीर केवट को जाल अधिक ही भारी लगा। अवश्य कोई बड़ी मछली फँसी है उसने सोचा। छोटी मछलियों के अलावा एक डेढ़ फुट लंबी मछली फँसी थी।

''अरे ऐसी मछली तो पहले कभी नहीं देखी। यह तो दुर्लभ जान पड़ती है।'' उसने सोचा।

नदी का यह क्षेत्र घड़ियाल अभ्यारण के अन्तर्गत

आता है। यहाँ मछली पकड़ना निषेध है। महावीर अपनी आजीविका कृषि और पशुपालन से चलाता है, पर कभी-कभी वह रात में चोरी-छिपे अपनी नाव लेकर मछली पकड़ने आ जाता है। उसकी पत्नी और बच्चे बहुत मना करते हैं। ''यह गैर कानूनी है पिताजी! आप कभी पकड़े जाओगे और बीच नदी में मगर-घड़ियाल का डर भी है।'' पर वह किसी की नहीं सुनता।

''दिनेशऽऽ! दिनेशऽऽ! घर आकर उसने बेटे को आवाज लगाई। ''देखो दिनेश! आज क्या चीज फँसी है, जबरदस्त! बहुत महँगी बिकेगी।''

''अरे? ये क्या ले आए पिताजी।'' उसने धीरे से उसे जाल से निकाला। उलट-पलट कर ध्यान से देखा। उसका मुँह लंबी थूंथ जैसा था। आँखें अत्यंत छोटी और आजू-बाजू दो फ्लिपर्स थे। पूँछ लंबी थी। पुच्छ फिन और पीठ पर भी एक फिन था। त्वचा चिकनी थी।

''पिताजी, यह तो मछली नहीं लग रही। शायद सूंस (डॉल्फिन) है। मैं जुगल भैया को बुलाकर लाता हूँ। उनके पास जन्तु विज्ञान की पुस्तकें हैं। वे ही बता सकते हैं कि यह कौन सा जीव हैं।''

जुगल पड़ोस में रहता था, वह जीव-विज्ञान में बी.एस.सी. कर रहा था। दिनेश जब उसको बुलाने आया तो वह पढ़ाई कर रहा था। ''भैया! थोड़ी देर के लिए हमारे घर चलो। आपको कुछ दिखाना है।''

''यह तो सूंस ही है। गंगेटिक डॉल्फिन! बच्चा है अभी शायद।'' काका जी, आप इसे वापस नदी में छोड़ आएं, मर जाएगा नहीं तो यह। बहुत दुर्लभ है।''

महावीर भड़क गया। ''क्यों छोड़ आऊँ? बड़ी मुश्किल से तो ऐसी चीजें हाथ लगती हैं।'' दिनेश का मन दुखी हो गया था। विज्ञान की अध्यापिका जी ने बताया था कि यह हमारा राष्ट्रीय जलजीव पशु है। इसे मारना अपराध है। यह तो बच्चा है अभी। इसकी माँ इसे ढूँढ रही होगी।

उसके पिता सोने चले गए थे।

उसने डॉल्फिन शिशु को प्यार से हाथ लगाया। ''मैं इसे 'पोपो' कहूँगा। ''पोपो! डरो मत, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़कर आऊँगा। उसने पोपो को पानी के बड़े टब में रख दिया। यहाँ तुमको आराम मिलेगा।''

''जुगल भैया! पिताजी तो सोने गए। अभी छोड़ आएं इसे?'' ''सुबह जल्दी चलेंगे दिनेश् अभी मुझे पढ़ाई करनी है।''

सुबह-सुबह जुगल अपनी मोटर साईकिल लेकर दिनेश के यहाँ आ गया था। दिनेश पोपो को लेकर पीछे बैठ गया। ''बताओ कहाँ चलना है? कौन से घाट से मछली पकड़ते हैं तुम्हारे पिताजी?''

दिनेश रास्ता बताता चल रहा था। वह जुगल से बोला, भैया गंगेटिक डाल्फिन के बारे में कुछ और बताओ न!''

''इतना तो तुम्हें पता ही होगा कि यह स्तनधारी जीव है। यह बच्चे देती है और अपने बच्चों को दूध पिलाती है। पर एक नई बात तुम्हें बता दूँ कि यह अंधी होती है और प्रतिध्वनि द्वारा अपने शिकार की खोज करती है।''

''अंधी? पर क्यों?''

''अधिकतर ये पानी के भीतर कीचड़ युक्त जल में तैरती हैं इसलिए इनकी आँखों का अधिक उपयोग नहीं होता। ''अच्छा!'' ''और यह खाती क्या है? भैया?'' ''यह मांसाहारी है। छोटी-बड़ी मछलियाँ और झींगे वगैरह खाती हैं।''

''यह तो अच्छी खासी भारी है।'' ''यह तो कुछ नहीं है। वयस्क डॉल्फिन तो २ मीटर तक लंबी हो जाती है और वजन में ५० कि.ग्रा. से भी अधिक।''

''ओह! आपको तो सब पता है, इसके बारे में।'' ''इसके बारे में एक बार हमारी कक्षा में चर्चा हुई थी। इनकी संख्या बढ़ नहीं पा रही है। प्रदूषण और अवैध शिकार के कारण। इसके अलावा जगह-जगह तो नदियों पर बाँध बने हुए हैं। इसलिए इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में बाधा आती हैं।''

''यह तो बड़ी गलत बात है भैया!''

''इनकी प्रजनन दर भी कम है। एक बार में एक ही

बच्चा होता है, वह भी २–३ साल में। इसलिए भी इनकी संख्या अधिक नहीं बढ़ती।''

''आपने इसका वैज्ञानिक नाम तो बताया ही नहीं भैया!'' ''प्लेटानिस्टा गंगेटिका। यह गंगा, ब्रह्मपुत्र और इनकी सहायक नदियों में पायी जाती है।''

''भैया! आपने आज बहुत सी नई–नई बातें बताईं। लो नदी का किनारा भी आ गया।''

''मैंने इसका नाम पोपो रखा है। पोपो, तुम अपने घर जाओ अब। तुम्हारी माँ तुम्हें ढूँढ रही होगी।''

''फिर मिलेंगे पोपो!'' दिनेश ने पोपो को नदी में छोड़ दिया। उस दिन उसने पिता की बहुत डाँट खाई थी।

जब कभी दिनेश नदी किनारे जाता, पोपो को आवाज अवश्य लगाता और पोपो आस–पास होता तो एक गोता लगाकर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य देता।

कई माह बीत गए। रात्रि में महावीर मछली पकड़ने गया। उसके परिवार को जिसका अंदेशा था वही घटना घट गई।

एक मगरमच्छ ने उसकी छोटी सी नाव उलट दी। सामने साक्षात मौत थी। महावीर चिल्लाया ''बचाओ ऽऽऽ बचाओ ऽऽऽ''

तभी न जाने कहाँ से ३–४ डॉल्फिनें आ गईं। उन्होंने मगरमच्छ को दूर तक खदेड़ दिया । महावीर की आँखों में आँसू आ गए।

उन बुद्धिमान जीवों ने उसको बचा लिया था। उस दिन के बाद से उसका हृदय बिल्कुल बदल गया।

अब उसने मछली पकड़ना छोड़ दिया था। मगरमच्छ के डर से नहीं बल्कि डॉल्फिनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए।

● कोटा (राज.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- दशरथनंदन शत्रुघ्न किस माता के पुत्र थे?
- विराट नगरी में महारथी अर्जुन ने अज्ञातवास के समय कौनसा नाम रखा?
- इंग्लैण्ड के पड़ोसी एक देश में प्राचीन काल में श्रेष्ठ लोगों (आर्यों) का निवास था। इस देश का नाम अब क्या है?
- रामेश्वरम् में जिस स्थान से श्रीराम सेतु का बनना शुरु हुआ उस स्थान का नाम क्या है?
- देवताओं के गुरु कौन माने जाते हैं?
- दिल्ली में खुसरु खान ने स्वयं को हिन्दू सम्राट घोषित किया। कितने समय तक वह शासन कर सका?
- विष्णु स्तम्भ लोहे का एक ऊँचा स्तम्भ है जिसमें गत सोलह सौ वर्षों से जंग नहीं लगी है। यह स्तम्भ कहाँ है?
- वीर सावरकर की प्रेरणा से लंदन में कर्जन वॉयली का वध करने वाला क्रांतिकारी कौन था?
- चित्तौड़ के तीसरे साके के समय चित्तौड़ में स्थित सेना के सेनापति कौन थे?
- असम का पहला राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर कब बनाया गया था?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

मुनिया और रीना

लघुकथा : मीरा जैन

चौदह वर्षीय मुनिया काम के बदले गेहूँ चावल ही मांग कर ले जाती। रीना भी बड़ी खुश घर के छोटे मोटे काम विद्यालय की छुट्टी के दिन अधिकांशतया रविवार को मुनिया मात्र थोड़े से अनाज के लिए सरलता से प्रसन्नतापूर्वक निपटा जाती साथ ही रीना का पुराना पड़ा अनाज ठिकाने लग रहा था वे अलग। मुनिया को देखते ही रीना की बाँछें खिल जातीं। हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा, ऊपर से रीना जब तब अपना उपकार जताने से नहीं चुकती। कभी रीना ने यह जानने का प्रयास नही किया मुनिया को पेट भर भोजन मिलता है या नहीं। इस डर से भी नहीं पूछती कि कहीं उसका प्रश्न उस पर ही भारी न पड़ जाये। सखियों के बीच बालिका मुनिया को खाद्य सामग्री प्रदान करने हेतु अपनी डींगे हाँक कर स्वयं को समाज सेविका घोषित करती वह अलग। पिछले रविवार मुनिया नहीं आई लेकिन इस रविवार भी मुनिया गायब, रीना का पारा सातवें आसमान पर। मुनिया के घर का पता ठिकाना भी नहीं था। ढूंढों तो कहाँ ढूँढे बस केवल मोहल्ले का नाम ज्ञात था उसी आधार पर निकल पड़ी अपनी टू व्हीलर लेकर उसे खोजने, एक जगह मंदिर के पास बने चबूतरे और पास ही के पेड़ पर लगी तख्ती देख यह ठिठक गई जब उसे पढ़ा तो आँखें गीली हो गईं।

उस तख्ती पर लिखा था – ''कृपया अपनी इस मासूम बेटी की थोड़ी सी सहायता कीजिए। गर्मी का मौसम है मेरी परिक्षाएं चल रही है। मैं अभी काम पर जाने में असमर्थ हूँ। मुट्ठी भर अन्न इस डिब्बे में डालें और चुल्लू भर पानी इस कटोरे में क्योंकि पर्यावरण व जीव दया हेतू मूक पक्षियों के भूख प्यास का ध्यान हमें ही रखना है। मेरा व्यय माँ उठाती है और इन पक्षियों का...।

आप सभी को मेरा प्रणाम। – मुनिया

रीना ने गाड़ी में बैठे–बैठे ही डिब्बे पर दृष्टि डाली वह अनाज से पूरा भरा हुआ था और कटोरा पानी से।

● उज्जैन (म.प्र.)

मैना की सीख

कहानी : जया मोहन

सुन्दर वन में दूर–दूर तक बड़े–बड़े घने पेड़ थे। आम, पीपल, नीम, बरगद आदि। पेड़ों पर बहुत सारे पक्षी रहते थे। जंगल में शेर, चीता, भालू, लोमड़ी, बन्दर आदि अनेक पशु व जानवर पक्षियों में कोयल, तोता, मैना, नीलकंठ भी थे। सब आपस में मिलजुल कर रहते। सब, मित्र आपस में नाचते गाते। लेकिन मीकू बन्दर बड़ा नकचढ़ा था। वह सबसे अलग रहता न तो किसी के साथ खेलता, न बात करता। बस अपना काम करके अकेले अपने घर रहता। गिल्लो गिलहरी उसे समझाती ''तुम क्यों चुपचाप उदास रहते हो? सबके साथ मिलते–जुलते क्यों नहीं? ऐसा करने से तुम्हारा मन बदलेगा।'' पर मिंकू अपनी धुन में ही रहता।

एक दिन चिंटू खरगोश का जन्मदिन था। उसने सभी जंगलवासियों को अपने घर सहभोज दिया। वह मीकू के पास भी गया। ''भैया! कल मेरा जन्मदिन है। मैने सहभोज रखा है। आप भी आइएगा।'' मीकू ने कोई उत्तर नहीं दिया। दूसरे दिन चिंटू का घर गुब्बारे फूलों से सज गया। चिंटू की माँ ने सहभोज के लिए ढेर सारे पकवान बनाये। सुबह चिंटू ने नये कपड़े पहने। शाम को सारे पशु–पक्षी सजधज कर चिंटू के घर आए। सभी चिंटू को देने के लिए उपहार लाये थे। सबने मिलकर खूब नाच गाना किया। चिंटू ने लड्डू बांटे तो सभी ताली बजाकर गाने लगे 'सुदिनं सुदिनं तव जन्मदिनम्।'

सहभोज में स्वादिष्ट भोजनकर सभी ने चिंटू की प्रशंसा की। ''भाई! आनन्द आ गया। तुमने तो ढेर सारे अच्छे अच्छे पकवान खिलाए। सभी एक से बढ़कर एक थे।'' चिंटू खुशी से सबको बता रहा था। ''ये सारे पकवान मेरी माँ ने अकेले ही बनाए हैं।'' सभी आश्चर्य से बोले ''अच्छा। तुमने तो बहुत खिला दिया।'' मोटू हाथी ने कहा, ''वाह! रसगुल्ले व खीर बड़ी अच्छी थी। मैंने तो जी भर कर खाई।'' सभी एक साथ बोल पड़े ''अरे! तुमने ही नहीं, हमने भी खूब खाया।'' सभी नाच गाकर खा पीकर चिंटू को नमस्ते कह कर अपने अपने घरों को लौट गए। सभी आपस में कह रहे थे कि ''चिंटू का पड़ोसी मीकू क्यों नहीं आया? क्या चिंटू ने उसे बुलाया?'' बात काटते हुए भालू ने कहा ''नहीं नहीं, ऐसा हो ही नहीं सकता।'' ''हाँ भालू भाई ठीक कह रहे हैं'' हाथी बोला ''मैंने स्वयं देखा था चिंटू को मीकू के घर जाते हुए।'' सब बोल पड़े ''चिंटू बड़ा मिलनसार है वह ऐसा कभी नहीं कर सकता। अरे मीकू तो है ही ऐसा। वह कभी किसी के घर दुख–सुख में भी नहीं जाता।'' मीकू पेड़ पर बैठा सबकी बातें सुन रहा था।

मीकू ने कहा कहे तो कोई कहता रहे। मुझे हल्ला गुल्ला नहीं अच्छा लगता। मैं अकेला ही भला। चिंटू की माँ ने कहा'' बेटा! मीकू नहीं आया। तुम उसके लिए मिठाई और भोजन दे आओ।'' ''ठीक है माँ! चिंटू मीकू के लिए भोजन लेकर पेड़ के पास पहुँचा। ''मीकू भैया! नीचे आइए, माँ ने आपके लिए भोजन भिजवाया है।'' चिंटू पुकारता रहा पर मीकू चूप रहा। चिंटू ने सोचा संभवतः मीकू भैया सो गये होंगे। वह अपने घर लौट आया। ये बातें कोयल भी सुन रही थी। चिंटू के जाने के बाद बोली ''मीकू! तुमने ये ठीक नहीं किया। तुम्हारे इसी व्यवहार के कारण कोई तुमसे नहीं बोलता है।''

एक बार एक मैना उड़ते–उड़ते उसी पेड़ पर आ गयी। मीकू को देखकर उसने कहा ''भाई नमस्ते। मैं रानी मैना हूँ। आपका नाम क्या है। मैं कुछ महीने यहाँ रहूँगी।'' मीकू ने मैना की बात का उत्तर नहीं दिया। वह अपने ही काम में लगा रहा। मैना को मीकू की यह बात बहुत बुरी लगी। ''ये कैसा है? मैं तो यहाँ अपरिचित हूँ। कम से कम इसे तो मुझसे मेरी आवश्यकता पूछनी चाहिए। इसमें तो संस्कार नाम की चीज ही नहीं है। इतनी दूर उड़ कर आयी हूँ। गला प्यास से सूख रहा है। यहाँ आसपास कोई दिखाई

भी नहीं दे रहा है। क्या करूँ? थकान के मारे उड़ा भी नहीं जा रहा है कि कहीं से पानी का पता लगा लूँ।''

विवश होकर वह मीकू के पास गई, ''भैया! मैं बहुत प्यासी हूँ क्या तुम मुझे पानी पिला सकते हो?'' मीकू बीना कुछ कहे जाकर पानी व फल ले आया। ''लो पानी पी लो, फल खा लो, तुम भूखी भी होगी।'' सचमुच मैना को भूख भी बहुत लगी थी। उसने पानी पिया, फल खाए। धन्यवाद देते हुए मैना ने पूछा ''भैया! तुम्हारा नाम क्या है?'' ''मेरा नाम मीकू है। तुम्हारा क्या नाम है ?'' ''मीकू भैया! मेरा नाम रानी है।'' मीकू के जाने के बाद रानी ने सोचा मीकू मन से बुरा नहीं लगता। शायद इसे किसी ने संस्कार नहीं सिखाए। मीकू अपने पड़ोसियों से बोलता नहीं था। हमेशा चिड़चिड़ाता रहता। कोई मीकू से मिलने जाता तो निकलता नहीं। कोई मीकू को बुलाता तो वह कभी जाता नहीं। मीकू अपनी पत्नी बच्चों को डाटता रहता। किसी से मिलने नहीं देता। मीकू की पत्नी सबसे बोलती थी। जब मीकू देखता तो कहता 'क्या पंचायत लगा रखी है? कोई काम–धाम नहीं है क्या?'

एक दिन उसका परिवार पड़ोस के जंगल में चला गया। उस जंगल में मीकू की ससुराल थी। मीकू के साले का विवाह थी। सबने मीकू को निमंत्रण दिया। बच्चों और पत्नी ने भी कहा चलिए। मीकू नहीं गया। ''मुझे नहीं अच्छा लगता ये

हल्ला गुल्ला।'' ठंड का मौसम था। मीकू ने घर में रखे ठंडे पानी से नहा लिया। थोड़ी देर में उसे सर्दी लगने लगी। वह काँपने लगा। मीकू को तेज बुखार चढ़ गया। वह दर्द व बुखार के कारण 'आह! आह!' करके कराहने लगा। पड़ोसी कबूतर ने कोयल से कहा ''बहन! लगता है मीकू बीमार है।'' कोयल ने आँख नचाते हुए कहा ''होगा बीमार कबूतर भाई! हमें क्या? मीकू ने हम लोगों को कभी पूछा है, कभी बात की है?'' ''हाँ, कोयल बहन! कह तो तुम ठीक रही हो।'' मीकू का बुखार धीरे–धीरे तेज हो गया। वह अचेत हो गया।

मैना लौटी तो मीकू की कराह सुनाई दी। संभवतः मीकू को कष्ट है। चलू देखूँ। फिर मैना ने सोचा 'होगा मुझे क्या करना। वह तो कभी किसी को पूछता नहीं। पता नहीं मीकू हर समय किस घमंड में रहता है। मैना को अपने ऊपर गुस्सा आया वो ऐसा क्यों सोच रही है? माँ तो हमेशा हमें सिखाती है कि हमें अपना स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए। कष्ट में सहायता करनी चाहिए। बुरे के साथ बुरा नहीं अच्छा व्यवहार करना चाहिए। इससे बुरा भी सुधर सकता है।

''धन्यवाद माँ! तुमने मुझे स्मरण दिला दिया। नहीं तो मुझसे बहुत बड़ी भूल हो जाती।'' रानी मैना मीकू के घर गयी। मीकू अकेला पड़ा कराह रहा था। मैना ने मीकू का माथा छुआ। अरे, ये तो बुखार से तप रहा है। होंठ सूख रहे है। रानी ने मीकू को चम्मच से पानी पिलाया। तो मीकू ने आँखें खोली। ''आप रानी दीदी! दीदी! मेरा सिर पीड़ा से फट रहा है।'' कह कर मीकू ने आँखें बन्द कर ली। मैना तेजी से उड़कर डाक्टर टूं टूं तोते को ले आई। डाक्टर ने देख कर सुई लगाई दवा दी। रानी ने मीकू के सिर पर ठंडे पानी की पट्टी रखी। समय पर दवा देती रहना।'' ''जी डाक्टर साहब! चलिए मैं आपको छोड़ आऊँ।'' ''नहीं नहीं रहने दो रानी। तुम मीकू के पास रहो मैं चला जाऊंगा।''

मैना रात दिन जागकर अपना भोजन पानी भूलकर मीकू की सेवा करने लगी। मीकू धीरे धीरे ठीक होने लगा। मीकू को मन ही मन लाज आ रही थी। मैंने कभी रानी से ठीक से बात भी नहीं की पर ये मेरा कितना ध्यान रख रही है। कबूतर ने सभी को मीकू के बीमार होने की सूचना दी। कोई भी पशु–पक्षी मीकू को देखने नहीं आया। मीकू ठीक हो गया। रानी को धन्यवाद देते हुए मीकू ने कहा ''बहन! तुम न होती तो मैं मर जाता।'' रानी ने कहा, ''तुम पहले ये बताओ कि तुम किसी के दुख–सुख में सम्मिलित क्यों नहीं होते? फिर तुम क्यों सोच रहे हो कि कोई तुम्हें देखने आयेगा। तुम न तो किसी से मिलते हो न बोलते हो। हर समय चिड़चिड़ाते रहते हो। कोई तुम्हें बुलाता है तो तुम मना कर देते हो। ऐसे कोई तुमसे क्यों संबंध रखेगा? क्या तुम्हें ये बातें किसी ने सिखाई नहीं।'' मीकू की आँखों में आँसू आ गए ''रानी बहन! मेरे माता–पिता बचपन में ही शांत हो गए। मैं अनाथ हो गया। शायद मेरे माता–पिता होते तो मुझे सिखाते।''

रानी ने मीकू के आँसू पोंछते हुए कहा ''कोई बात नहीं भैया! मैं हूँ न तुम्हारी बहन! भैया! देखो सभी अपना खाते हैं कोई किसी से कुछ नहीं चाहता। सब स्नेह चाहते है अपनत्व भरी बोली सबका मन जीत लेती है। तुम सबसे प्रेम से बोलो मिलो–जुलो, इससे तुम्हारी उदासी व चिड़चिड़ापन दूर होगा। सबके सुख–दुख में साथी बनो। ऐसा करने से सभी तुम्हें पूछेंगे। हमें जो व्यवहार अच्छा लगता हो वही दूसरों के साथ करना चाहिए।'' आज पहली बार मीकू को किसी ने इतने प्यार से, अपनेपन से समझाया था। मीकू ने मन ही मन कहा ''मैना बहन! ठीक कह रही हैं। मैंने कभी किसी को नहीं पूछा। मैं गलत था अब मैं सबसे प्यार से बोलूँगा। नाचूँगा, गाऊँगा। अब सबके यहाँ सुख–दुख में जाया करूँगा।

मैना बहन मैं सोच रहा हूँ कि सबको अपने घर बुलाऊँ।'' ''हाँ मीकू भैया! तुमने बहुत अच्छा सोचा। तुम सहभोज का प्रबंध करो। मैं सबको न्यौता दे आती हूँ।'' सब मीकू के परिवार वाले तो आश्चर्यचकित रह गए मीकू का व्यवहार देख कर। मीकू ने पहली बार बच्चों को प्यार से गले लगाया। पत्नी से मीकू ने कहा मुझे क्षमा कर दो मैं हमेशा ही डॉटता रहा। बच्चे खुश थे कि पिताजी बदल गए। मीकू की पत्नी ने पूछा अरे! घर में इतना सामान क्यों आया है?'' ''अरे भाई मैंने सभी जंगलवासियों को

सहभोज पर बुलाया है।'' बच्चे ताली बजाकर खुश हो गए। खूब आनंद आएगा। मैना जिसके पास भी जाकर कहती कल मीकू के यहाँ सहभोज है सब कहते मीकू और सहभोज।'' ''हाँ भाई! आप सब लोग जरूर आइएगा। मीकू भैया एकदम बदल गया है। अगर आप सब सहभोज में नहीं आए तो मीकू का दिल टूट जाएगा।'' डॉ. लोमड़ ने कहा ''हम सबको मैना बहन का कहना मानना चाहिए।'' सबने कहा ''हाँ हाँ मैना बहन! हम सहभोज में अवश्य आएंगे।'' सभी पशु पक्षी मीकू के घर आये। मीकू ने सभी का हँस हँस कर स्वागत किया। सबने छक कर भोजन किया। खूब नाचे गाये। मीकू ने हाथ जोड़कर कहा ''आप सब मुझे क्षमा कर दीजिए।'' कोई बात नहीं मीकू!''

डाक्टर लोमड़ ने हँसते हुए कहा ''मीकू! ये चमत्कार (जादू) कैसे हुआ? किसने तुम्हें ऐसी सीख दी जो तुम बदल गए।'' मीकू ने कहा ''ये मैना बहन की सीख थी। जिसने मेरी आँखें खोल दीं।'' सभी लोग मैना की प्रशंसा करने लगे। मीकू के परिवार वाले बार बार मैना को धन्यवाद दे रहे थे।

एक दिन मैना के घर से खबर आई। 'माँ अस्वस्थ है जल्दी आओ।' मैना ने कहा ''मुझे अब घर जाना पड़ेगा।'' यह सुनकर सब उदास हो गये। ''मैना तुम्हारे जाने के बाद हमें बुरा लगेगा। मैना ने कहा मुझे भी आप सबको छोड़ने का दुःख है। मुझे जाना तो होगा।'' सभी लोग मैना को छोड़ने बहुत दूर तक गए। सभी की आँखों में आँसू थे। मैना ने कहा ''कबूतर मेरा घर जानता है। कोई बात हो तो मुझे सूचना देना, चिट्ठी भिजवाना।'' कुछ दिनों बाद मीकू ने चिट्ठी लिखकर कबूतर को दी। ''भाई! ये चिट्ठी मैना बहन तक पहुँचा देना।''

''हाँ हाँ क्यों नहीं मीकू भाई?'' चिट्ठी में मीकू ने लिखा ''बहन् नमस्ते। तुम कैसी हो? माँ कैसी है? हम सबको तुम्हारी बहुत याद आती है। तुमने तो मेरा जीवन ही बदल दिया। अब मैं सबके साथ मिलकर रहता हूँ। और सभी आपकी प्रशंसा व याद करते हैं। सब आपसे स्नेह करते हैं। चिट्ठी पढ़कर मैना हर्ष से झूम उठी।'' माँ की सीख काम आई। दूसरों को अच्छाई का मार्ग दिखाने से उनका जीवन संवर जाता है। मुस्कुराती हुई मैना पत्र का उत्तर लिखने बैठ गई।

● **प्रयागराज (उ.प्र.)**

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

'अ' 'ब' की बहन है। 'स' 'ब' की माँ है। 'द' 'स' का पिता है। 'ई' 'द' की माँ है। 'अ' 'द' की रिश्ते में क्या लगेगी?

(उत्तर इसी अंक में)

।। बाल प्रस्तुति ।।

पहेलियाँ

● दिशा कुर्मी

(१)

विद्या देते, दुःख हर लेते,
चूहे पर चलते-चलते।
लड्डू खाते, तोंद फुलाते
ढेर करें लिखते-लिखते।।
ज्ञानी बन जाओगे,
उनकी रचना को पढ़ते-पढ़ते।
कौन देवता बूझो भैया
जिन्हें भवानी सुत कहते?

(२)

पहला सत्याग्रही विश्व का
लगन लगी श्रीहरि की।
जिसने कभी नहीं स्वीकारी
झूठी सत्ता पितु की।
खड्ग अंग को काट न पाई
पावक जला न पाया।।
किसे बचाने नृसिंह बनकर
परमेश्वर था आया?

(३)

कोई काम कठिन ना जिसको,
संकट मोचन न्यारा।
कई बार जिसने राघव को
गाढ़े समय उबारा।
रोम-रोम में राम रमा है
जिसने लंक जलाई।।
घर-घर में पूजी जाती है
किसकी शुचि सेवकाई?

(४)

वाल्मीकि आश्रम में पलते
दोनों भाई न्यारे।
शुचि रामायण गाते फिरते
राजा राम हमारे।
अश्वमेघ का घोड़ा पकड़ा था
आश्रम के आगे।।
लंका विजयी छुड़ा न पाये
प्राण बचाकर भागे?

(उत्तर इसी अंक में)

● गौरझामर (म.प्र.)

मस्तिष्क का व्यायाम

- राजेश गुजर

बच्चो, नीचे बने इन रंगीन डिब्बों को ऊपर से देखने पर, नीचे बनी ४ आकृतियों में से १ सही है। बताओ कौन सी दिखेगी?

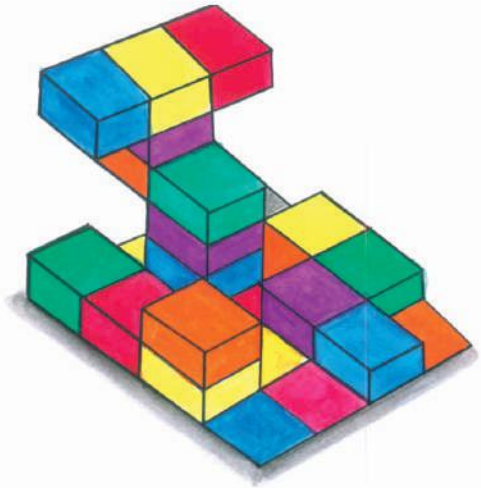

(उत्तर इसी अंक में)

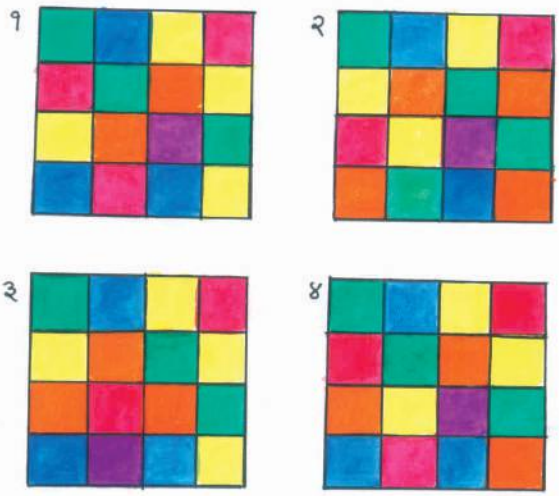

रास्ता बताओ

● मनोज कुमार 'अनमोल'

काव्या अपने घर का रास्ता भूल गयी है, कृपया सही रास्ता खोजकर उसे घर तक पहुँचाने में उसकी मदद करें।

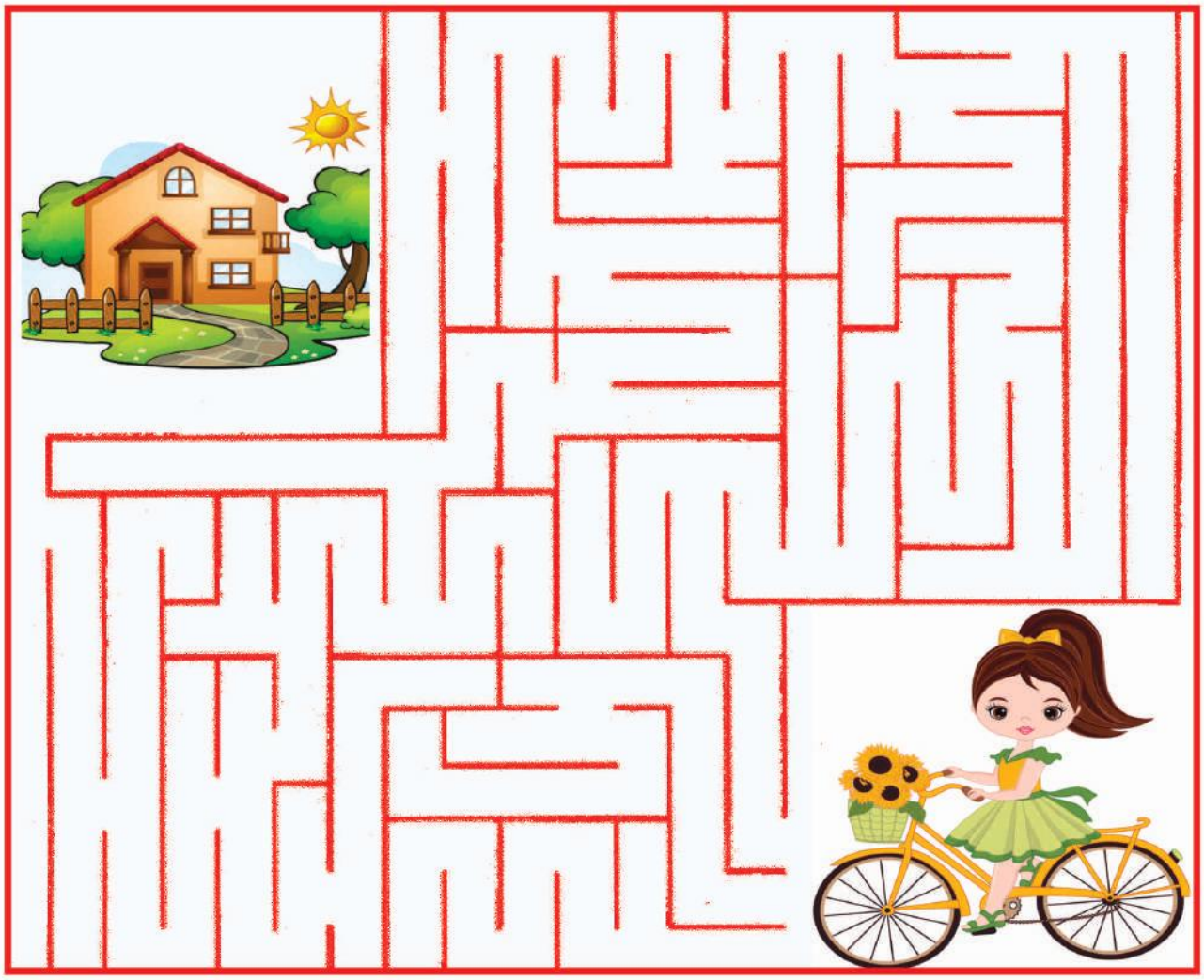

डॉ. जाकिर अली रजनीश सम्मानित

लखनऊ। विज्ञान दिवस के अवसर पर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान संचार पुरस्कार वितरण समारोह में लखनऊ के लोकप्रिय लेखक और 'साइंटिफिक वर्ल्ड' के सम्पादक डॉ. जाकिर अली 'रजनीश' को बच्चों के मध्य विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए राष्ट्रीय विज्ञान संचार पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें दो लाख रूपये, स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए।

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला

सुमित्रा, बृहन्नला, आयरलैण्ड, धनुषकोटि, बृहस्पति, एक वर्ष, दिल्ली में कुतुब मीनार के पास, मदनलाल ढींगरा, जयमल्ल राठौड़, वर्ष १९५१ में

मस्तिष्क का व्यायाम

(४)

राज्यारोहण

६ जून १६७४। हिन्दू राष्ट्र में हिन्दवी स्वराज का स्वर्ण गैरिक ध्वज नीलाकाश में लहरा उठा। दसों दिशाएं छत्रपति शिवाजी महाराज की जयध्वनि से गूंज उठीं। आज शिवाजी छत्रपति हो गये थे। उन्होंने प्रजा की ओर से राज–मुकुट धारण किया था। वे सेवक से सम्राट बन गये थे।

किन्तु विधाता का विधान भी कितना विचित्र है कि किसी भी शुभ कार्य को वह निर्विघ्न सम्पन्न नहीं होने देता। बाधायें कार्य की महत्ता की कसौटी बन जाती हैं। शायद श्रेष्ठता और महानता की पहचान ही है कि प्रतिष्ठित होने से पूर्व के संकटों से जूझने और जीतने की परीक्षा दे। शिवाजी के राज्यारोहण की चर्चा चली तो कुछ रूढ़ीवादी लोग सामने आ गये। उन्होंने आपत्ति की कि 'शिवाजी का राज्याभिषेक नहीं हो सकता– वे क्षत्रिय नहीं हैं।'

इस जटिल समस्या का समाधान आवश्यक था। कौन बताये कि शिवाजी क्षत्रिय ही हैं– किसका कहना लोग मानेंगे। प्रजा के बीच फैलाया गया यह संदेह कैसे दूर होगा? इस विषय पर चर्चा हो रही थी कि इसी बीच एक वयोवृद्ध सज्जन बोले– ''भाई! यह कौन सी बड़ी बात है? काशी के महापंडितों की राय ले ली जाय। काशी अपने देश की धार्मिक एवं सांस्कृतिक राजधानी है। काशी के पंडितों की बात सभी को मान्य एवं ग्राह्य भी होगी।''

वार्ता का रुख अब इस ओर मुड़ गया कि काशी के किस पंडित की सर्वाधिक मान्यता है और किसके वचनों पर विश्वास करके प्रजा निःशंक हो सकेगी।

वही वृद्ध पुनः बोला– ''मेरे ध्यान में तो एक ही नाम ऐसा है जिसकी संपूर्ण देश में मान्यता है–वह है विजय नगर सम्राट कृष्णदेव राय के गुरु दादा श्री रामेश्वर भट्ट के वंशज महापंडित श्री गागाभट्ट। वे उद्भट विद्वान हैं। काशी में उन्हें कलियुग का बृहस्पति कहा जाता है।''

समय बहुत कम था। एक दूत तत्काल काशी भेजा गया। पंडित गागाभट्ट से जब उसने शिवाजी के राज्यारोहण के मार्ग में उत्पन्न बाधा का उल्लेख किया तो पंडितराज की क्रोधाग्नि भभक उठी–''कौन कहता है कि शिवाजी क्षत्रिय नहीं हैं? वे जन्म और कर्म दोनों से क्षत्रिय हैं। उन्होंने इतिहास का प्रमाण देते हुए कहा कि वे राजस्थान की राजपूती परम्परा में से ही हैं।''

''महाराज!'', दूत बोला– ''यही सब समझाने के लिए आपको राजगढ़ तक चलना पड़ेगा। आपके श्रीमुख

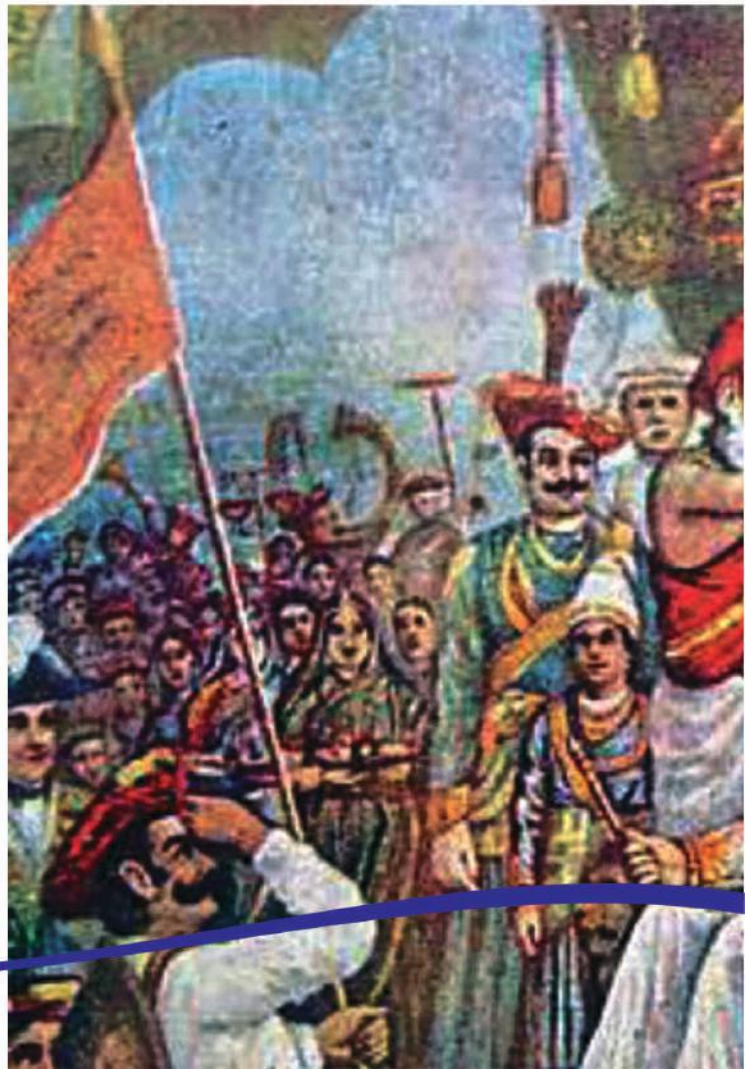

से सुनकर ही लोग विश्वास करेंगे।''

''चलो चलता हूँ'', वे बोले– ''लोग पागल हैं, निरे स्वार्थी। मैं चलकर स्वयं उनका राज्याभिषेक करूंगा। उस महा प्रतापी वीर पुरुष के हाथों ही हिन्दू धर्म का उद्धार एवं काशी की रक्षा संभव है। अभी तो केवल विश्वनाथ मंदिर ही टूटा है, सारे देवी–देवता एवं देवस्थान शिवाजी के अभाव में नष्ट कर दिए जायेंगे। इसे कहते हैं दुर्भाग्य एवं पाप का प्रभाव। हाय रे हिन्दू जाति! तेरा भाग्यसूर्य उदय होने के लिए छटपटा रहा है और तू उसके सामने संदेहों का कुहरा खड़ा कर रही है।''

गागाभट्ट रायगढ़ पहुंचे तो चारों और मंगलमय वातावरण व्याप्त हो गया। महाराज शिवाजी ने स्वयं उनकी अगवानी की। वह मिलन गागाभट्ट एवं शिवाजी का नहीं तो प्रत्यक्ष विद्वता एवं शौर्य का सुहाना संगम था।

महापंडित ने आसन ग्रहण किया। पद–प्रक्षालन, भोजन–विश्राम के पश्चात शिवाजी जब पुनः उनसे मिले तो एक नई समस्या खड़ी कर दी। बोले– ''महाराज! मैं तो स्वराज्य का सेवक हूँ– सम्राट किसी और को बनाइए।

जनता जनार्दन के इस राज्य का स्वामी होने की पात्रता मुझमें नही है।''

माता जीजाबाई भी उस समय वहीं विराजमान थीं। महापंडित की ओर अत्यंत ही निराशा के साथ देखा कि ''महाराज अब क्या होगा? गागाभट्ट ने परिस्थिति की गंभीरता को भांपकर शिवाजी को पास बुलाकर बिठा लिया, फिर अत्यंत ही संयत एवं गंभीर वाणी से बोले– ''यदि स्वराज्य में आत्मविश्वास तथा एकता बनाए रखनी है तो शिवाजी को ही राजमुकुट धारण करना होगा। बिना विश्वास के प्रजा शासक को अपना समर्थन नहीं देती। आपने अपने शौर्य से समाज में नवजीवन का संचार किया है। अत्याचारी शासकों की पराधीनता से जनता को मुक्ति दिलाई है। इतने बड़े साम्राज्य को सिंहासन के अभाव में स्वीकृति नहीं मिल सकती और फिर अभी तो देश का केवल एक हिस्सा ही स्वराज्य की सीमा में आ पाया है, शेष भारत को भी पराधीनता के पाश से मुक्त कराना है। यदि छत्र न रहेगा तो स्वराज्य स्थायी न हो सकेगा। राज्यारोहण संस्कार के बाद ही स्वराज्य की स्वीकृति मिल सकेगी। कौन कहता है कि आप अपने लिए छत्रपति बनें–सिंहासन सुख भोग का नहीं, सेवा साधन और बलिदान की वेदी है। उस पर बैठकर स्वराज्य की सम्पूर्णता हेतु सिद्धि की साधना करनी होगी– यह कार्य आपको केवल आपको करना है। आपका राज्याभिषेक होगा– उसको मैं पूर्ण करूंगा।'' फिर माता जीजाबाई की ओर मुड़कर पं. गागाभट्ट ने कहा– ''माँ, आप आदेश दें कि शिवाजी अपना राज्याभिषेक स्वीकार करें।'' और माता की आज्ञा तथा प्रजा की इच्छा का सम्मान करते हुए अन्ततोगत्वा शिवाजी को अपनी स्वीकृति देनी ही पड़ी। क्योंकि इस तर्क में पर्याप्त बल था कि सार्वभौम सत्ता–सम्पन्न शासक एवं शासनबद्ध स्वराज्य की ही प्रतिष्ठा होती है। तभी शत्रुओं में भय और समर्थकों के मन में विश्वास का उदय होता है। अन्यथा उसे बगावत और विद्रोह कहकर बदनाम करके नष्ट करने की कोशिश की जाती है।' शिवा जी कब चाहते थे कि स्वराज्य बिखर

जाय।

अब राज्याभिषेक की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गईं। भोजनादि का प्रबंध किया गया। सिंहासन तथा सभामंडप तैयार हो गए। मुख्यद्वार की ऊंचाई एवं भव्यता देखते ही बनती थी। संतों–महात्माओं, कवियों और विद्वानों के आशीर्वचन आने लगे। संत तुकाराम एवं समर्थ रामदास ने शिवाजी को मथुरा का कृष्ण एवं अयोध्या का राम बताकर जन हृदय में अगाध विश्वास का सृजन किया।

राज्याभिषेक कार्यक्रम विधि–विधान के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञोपवीत, तुलादान के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। रायगढ़ की सजावट बड़ी ही मनोरम थी। चारों ओर मंगलगान एवं उल्लास से वातावरण भर उठा था। जनभावनाएं जनसागर में लहर बनकर हिलोरें ले रही थीं।

और फिर ६ जून, १६७४ का वह शुभ दिन भी आया। शिवाजी कुल–देवता की पूजा आराधना करके तैयार हो गए। देश–विदेश से आये प्रतिनिधि, पंडित–विद्वान और शिवाजी के शासन के अष्टप्रधान सभी अपने अपने निश्चित स्थान पर विराजमान थे।

पं. गागाभट्ट के निर्देशानुसार शिवाजी महारानी सोयराबाई, राजकुमार शम्भा जी एवं छोटे पुत्र राजाराम के साथ आगे बढ़े और चौरंग पर आकर विराजमान हो गए। गागाभट्ट ने अभिषेक मंत्र प्रारम्भ किया। वेदमंत्रोच्चार चलता रहा। एक के बाद दूसरा कार्यक्रम सम्पन्न होता रहा किन्तु महाराज कहीं किसी और ही समस्या में उलझे हुए से दिखे– मानों वे इस नवीनदायित्व की गुरुता का अन्दर ही अन्दर आकलन एवं अनुभव कर रहे थे। राज्याभिषेक सम्पन्न होते ही तोपों से गोले छूटने लगे– यह इस बात का उद्घोष था कि शिवाजी अब छत्रपति हो गए– स्वराज्य संगठित हो गया– हिन्दवी स्वराज्य का सम्राट सत्तासीन हो गया।

राज्याभिषेक के बाद महाराज देवदर्शन करने गए। लौट कर माता जीजाबाई को साष्टांग प्रणाम किया तो माँ की आँखें भर आईं। शिवाजी की ठुड्डी में हाथ लगाकर बड़ी देर तक भावविह्वल सी उन्हें देखती रहीं– 'मेरा शिब्बा आज छत्रपति हो गया।' हिन्दवी स्वराज्य के सूर्य को लगा ग्रहण अब समाप्त हो चुका था। माँ ने बेटे को आशीष दिया और बेटे ने माँ को एक मौन आश्वासन कि, ''हे माँ, मैं यह समझता हूँ कि तेरे इन आँसुओं का अर्थ क्या है?''

।। अम्बेडकर जयंती : १४ अप्रैल ।।

समय का सदुपयोग

प्रसंग : साँवलाराम नामा

बात सन् १९२० की है। उन दिनों डॉ. भीमराव अम्बेडकर अपनी पढाई के सिलसिलें में लंदन गए हुए थे। उन्हें शिक्षा के प्रति इतना भारी लगाव व रुचि थी कि वह जब भी समय मिलता, पुस्तकें पढ़ने में डूब जाते।

लंदन में उन दिनों अस्नाडेकर के साथ वह एक कमरे में रहते थे। अस्नाडेकर को यह देखकर बड़ा ताज्जुब होता कि भीमराव हर समय पढ़ते–लिखते रहते हैं।

एक दिन आधी रात को उनकी नींद टूटी तो उन्होंने ध्यान लगाकर देखा कि वह तो पढ़ाई में ही डूबे हुए हैं। उन्होंने पूछा ''आप अभी और देर तक पढ़ेंगे? समय तो बहुत हो गया है, सो जाइए।''

अम्बेडकर ने बड़े गम्भीर स्वर में कहा, ''अस्नाडेकर साहब! खाने के लिए पैसा और नींद के लिए समय मेरे पास कहाँ है? मुझे तो एक–एक क्षण (पल) का सदुपयोग करना है।''

यह कहकर वह फिर पढ़ाई में तल्लीन हो गए।

● **जालोर (राज.)**

छोटी बड़ी

चैत्र शुक्ल नवमी तिथि पावन मंगलमयी घड़ी।
रामजन्म पर सजी आरती छोटी और बड़ी।।
तनिक ढूँढ बतलाओ थाली सबसे छोटी कौन?
कौन है किससे बढ़ते क्रम में कहो रहो न मौन।।

(उत्तर इसी अंक में।)

जलेबी का जलवा

कविता : सौ. पद्मा चौगाँवकर

मिठियाने, मुठिया से
की जादूगरी
तवई में नाच उठी
जलेबन परी!
चाशनी में तैरती,
करती अठखेली!
जलेबी अलबेली,
जलेबी अलबेली!
लड्डू हो पेड़ा,
बरफी या हलवा,
सबपे हैं भारी,
जलेबी का जलवा!
ललचाती सबको
केसरिया रसेली
जलेबी अलबेली,
जलेबी अलबेली!
भूल-भूलैया हैं,
चक्करीली चाल
इसका जवाब नहीं,
स्वाद बेमिसाल!
कोई न बूझे
ऐसी मीठी पहेली,
जलेबी अलबेली,
जलेबी अलबेली!

* मिठियाने = मिठाईवाला
* तवई = जलेबी बनाने का पात्र

● गंजबासौदा (म.प्र.)

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' भोपाल में सम्मानित

कटनी। टाइगर लैंड इंडिया फिल्म फेस्टिवल, भोपाल में दो दिवसीय तृतीय राष्ट्रीय आयोजन में कटनी नगर की ख्याति प्राप्त राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित कवयित्री, कथाकार एवं बाल साहित्यकार डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के तहत वन्य जीवन पर सर्वोत्तम कविता एवं पर्यावरण स्लोगन के लिए डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को वाइल्ड लाइफ ट्राफी के साथ ही 'टी आई एफ एफ ईयर बुक २०१९, वाइल्ड वाक के ३५००/- के कूपन एवं १५००/- नगर राशि देकर पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।'

सही उत्तर- उलझ गए - 'अ' 'द' की रिश्ते में पोती लगेगी। छोटा बड़ा - ९,३,२,१०,५,८,७,४,६,१

सीख

कहानी : रेखा लोढ़ा 'स्मित'

सौमित्र शुरु से ही पढ़ाई और अन्य कार्यों में बहुत ही तेज व होशियार था। विद्यालय में किसी भी तरह की प्रतियोगिता हो सौमित्र उसमें हमेशा भाग लेता रहा और अधिकतर प्रतियोगिताओं में प्रथम अथवा द्वितीय स्थान प्राप्त करता रहा। कक्षा में भी हमेशा उसका स्थान एक से पाँच के बीच ही रहता आया। उसका व्यवहार भी साथी विद्यार्थियों, पड़ोसियों व गुरुजनों के साथ मधुर व अच्छा था। लेकिन उसमें एक बहुत बड़ी कमी थी, जिसके कारण वह सबकी डाँट खाता रहता। वह कमी थी, उसका चीजों को चाहे वे काम की वस्तुएँ हो या कचरा, उन्हें जहाँ–तहाँ फैलाना और कहीं भी फेंक देना । उसकी इसी लापरवाही और आलस्य के चलते उसके माता–पिता उससे बहुत परेशान होते थे।

सौमित्र विद्यालय से आते ही अपना सामान जैसे कपड़े, परिचय पत्र, पानी की बोतल, टिफिन, जूते–मोजे कहीं भी पटक देता, यहाँ तक कि गृहकार्य करने के बाद अपनी कॉपी किताबें भी इधर–उधर कहीं भी रख देता और प्रतिदिन सुबह उसके घर चिल्लपों मची रहती। ''माँ!, मेरा एक जूता नहीं मिल रहा, माँ मेरी हिन्दी की कॉपी, माँ!, मेरा पेन'' और माँ उसे लताड़ती हुई एक–एक कर उसकी वस्तुएँ ढुँढवाती पर सौमित्र को कुछ समझ नहीं आता। अगले दिन फिर वही ढर्रा, फिर वही समस्या।

इसके अलावा सौमित्र की जो बहुत गंदी आदत थी कि वह कोई भी चीज खाता या काम में लेता तो उसका कचरा वह जहाँ खड़ा या बैठा होता वहीं डाल देता। जैसे, टॉफी खाकर उसका रैपर, पेन्सिल छील कर उसका बुरादा, यहाँ तक कि फल खाकर फलों के छिलके भी यथास्थान न डालकर यहाँ वहाँ कहीं भी फेंक देता। इस सब में वह इस बात का भी ध्यान नहीं रखता कि वह कहाँ खड़ा है। चाहे विद्यालय हो, सड़क हो या घर का आँगन हो उसे कचरा फैलाने से तनिक भी संकोच नहीं होता। उसके माता–पिता उसे समझा–समझाकर थक गए। पर उस पर कोई प्रभाव नहीं होता, उसके कान पर जूं तक न रेंगती।

एक दिन वह विद्यालय से लौटकर केला खा रहा था, तभी बाहर से उसके मित्र शशांक ने उसे पुकारा। ''सौमित्र! ओ सौमित्र! सौमित्र! जरा बाहर आना।'' शशांक की आवाज सुनते ही उसने फटाफट केला समाप्त किया और स्वभाववश छिलका बरामदे में ही डाल दिया तथा शशांक से मिलने फाटक के पास चला गया। शशांक ने उससे कहा ''आज तुम विद्यालय से जल्दी ही निकल गए, छुट्टी के बाद आचार्य जी ने बाल मेले की तैयारी के लिए रुकने को कहा था। आचार्य जी ने मुझे तुम्हें बुलाने भेजा है। चलो, तुम मेरे साथ विद्यालय चलो।'' शशांक की बात सुनकर सौमित्र बोला ''अरे राम! मैं

तो भूल ही गया था'' फिर उसने कहा'' तुम रुको मैं कपड़े बदल कर आता हूँ।'' और वह घर के अन्दर चला गया। उसने अपनी माँ को पुकार कर कहा'' माँ! विद्यालय जा रहा हूँ, थोड़ी देर में लौट आऊँगा। आचार्य जी ने बाल मेले की तैयारी के लिए बुलाया है।'' अन्दर से काम करते हुए ही माँ ने कहा ''अच्छा ठीक है, ध्यान से जाना और शीघ्र वापस आ जाना, पढाई भी करनी है।'' उसने कहा ''ठीक है माँ, मैं जा रहा हूँ।'' पर लौटते हुए उसे यह ध्यान ही नहीं रहा कि उसने केले का छिलका बीच बरामदे में डाल रखा है। वह दौड़ता हुआ आया और उसका पाँव केले के छिलके पर पड़ गया, छिलके के कारण सौमित्र फिसल कर धड़ाम से गिर गया। गिरने की आवाज सुन उसकी माँ और शशांक दोनों बरामदे की तरफ भागे। सौमित्र बरामदे में गिरा पीड़ा से कराह रहा था। उसे कोहनी, घुटने, गर्दन व माथे पर चोटें आई और वह अपना हाथ व पाँव हिला भी नहीं पा रहा था। जैसे तैसे शशांक व सौमित्र की माँ ने उसे उठाकर कार में लिटाया और अस्पताल लेकर गए।

डाक्टर ने उसकी अवस्था देखते ही उसका एक्स–रे करवाया तो पता चला कि उसकी जांघ व कोहनी की हड्डी टूट गई है, उसे प्लास्टर लगाना पड़ेगा। डॉक्टर ने बताया कि कम से कम तीन महीने तक सौमित्र उठ–बैठ व चल– फिर नहीं सकेगा उसे बिस्तर पर ही रहना पड़ेगा। पहले से ही पीड़ा से तड़पते सौमित्र को लगा जैसे उसे तीन महीने कैद की सजा सुना दी गई हो। उसकी आँखों से आँसू छलक गए। पिछले कई दिनों से जिस बाल मेले की तैयारी में वह जी जान से जुटा हुआ था, अब वह उसमें भाग भी नहीं ले सकेगा, न ही अर्धवार्षिक परीक्षा दे पाएगा। पर अब क्या हो सकता था, अब तो ऐसी स्थिति थी कि ''अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।''

घर आकर पलंग पर पड़े–पड़े सौमित्र सोच रहा था कि काश उसने सबकी बात मानकर कचरे को यथास्थान डालने की आदत बना ली होती तो वह केले का छिलका बरामदे में नहीं डालकर कचरा पात्र में फेंकता और उसे इस असीम कष्ट को नहीं सहना पड़ता। वह बाल मेले में भी मित्रों के साथ मौजमस्ती कर पाता। सौमित्र को अपनी ही गलती से अच्छा सबक मिल गया था। उसकी आँखें छलछला आई। भरे गले से उसने अपनी माँ को बुलाया और कहा कि वह कभी भी कचरे को या अन्य किसी भी वस्तु को इधर उधर नहीं फेंकेगा, उसे उचित स्थान पर ही रखेगा। उसने अपनी माँ का हाथ पकड़ कर इस बात का वादा किया। उसकी माँ की आँखों में खुशी के आँसू थे और सौमित्र की आँखों में दृढ़ निश्चय की चमक।

● **भीलवाड़ा (राज.)**

आपकी पाती

देवपुत्र का नवम्बर २०१८ का अंक प्राप्त हुआ। संपादकीय में अपनी बात के अंतर्गत संवेदनशील बनने का बहुत अच्छा संदेश दिया गया है। यदि हम दीन–दुखियों के प्रति संवेदनशील रहकर उनके कष्ट निवारण की सोचें तो रामराज्य की कल्पना के अनुरूप सुन्दर समाज का निर्माण संभव है। इस अंक की सभी रचनाएँ संवेदना बनाए रखने का संदेश देती हैं। वस्तुतः नव पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और अतीत के गौरव से परिचित कराने में देवपुत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। यह कहानी कविता एवं विभिन्न आलेखों के माध्यम से बच्चों के मन मस्तिष्क को उर्वर बनाए रखता है। इसमें प्रकाशित चित्रकथाएँ हमारे आसपास के वातावरण का सुन्दर चित्रण करती हैं और बच्चों के मानसिक विकास में सहायता प्रदान करती हैं। भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराकर देवपुत्र पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से हमारी रक्षा करता है।

● **सुरेशचन्द्र सर्वहारा, कोटा (राज.)**

गीत नए लिख जाएगी

कविता : सुकीर्ति भटनागर

माँ मुझको भी प्यारी सी,
कविता से मिलवा दो।
कब आएगी पास मेरे,
इतना तो बतला दो।।
हवा संग बहती रहती,
या पंछी बनी चहकती है।
क्या तितली सी उड़ती रहती,
या फूलों में वह बसती है।।
क्या रानी सी वह महलों में,
सपन सुहाने बुनती है।
या बरगद की घनी छाँव में,
चाव सलोने चुनती है।।
दूर-दूर फैले सागर में,
या खेतों-खलिहानों में।
आकाश, धरा, झरने, पर्वत,
या सूने मैदानों में।।
कहाँ-कहाँ ढूंढू मैं उसको,
सही दिशा का भान नहीं।
कैसी वह दिखती होगी माँ,
इसका भी अनुमान नहीं।।
बेटा, वह कण-कण में बसती,
अनगिन रंग दिखाती है।
आँसू बन तो कभी हँसी बन,
मन में भाव जगाती है।।
सदाचार की पोषक है वह,
सच्ची, सीधी बात करे।
अनाचार को दंडित करती,
नहीं किसी से कभी डरे।।
जब दे कर भोजन निर्धन को,
उसकी भूख मिटा दोगे।
हाथ पकड़ अंधों-लंगड़ों का,
सड़क पार करवा दोगे।।
जिस दिन रोती मुनिया को तुम,
खुशियाँ सब लौटा दोगे।
अपने आँगन के फूलों से,
सूने घर महका दोगे।।
उसी समय बस चुपके-चुपके,
कविता रानी आएगी।
तेरी कापी के पन्नों पर,
गीत नए लिख जाएगी।।

● पटियाला (पंजाब)

आओ समझें : महीनों का नामकरण

बच्चो! भारतीय खगोल वैज्ञानिकों ने प्राचीन काल से ही अन्तरिक्ष में स्थित जिन विशिष्ट तारों की खोज की उनका नाम नक्षत्र हुआ। नक्षत्र अर्थात जिनका क्षरण नहीं होता। नक्षत्र पंचांग का महत्वपूर्ण अंग है। इनकी संख्या २४ थी जो बाद में बढ़कर २७ मान ली गई। इसमें अभिजित नामक एक अल्प अवधि का नक्षत्र मिला देने पर यह २८ हो गई। यह वहीं अभिजित् नक्षत्र है जिसमें भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था।

बच्चो! भारतीय महिनों के नाम इन्हीं नक्षत्रों के आधार पर बने हैं अर्थात् जिस माह की पूर्णिमा तिथि को जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा रहेगा वह माह उसी नक्षत्र के नाम से पहचाना जाएगा।

नीचे २८ नक्षत्रों के नाम दिए जा रहे है जरा पहचानिए तो, किस भारतीय महिने का नाम किस नक्षत्र के नाम पर है।

(१) अश्विनी (२) भरणी (३) कृत्तिका (४) रोहिणी (५)मृगशिरा (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु (८) पुष्य (९) श्लेषा (१०) मघा (११) पूर्वा फाल्गुनी (१२) उत्तरा फाल्गुनी (१३) हस्त (१४) चित्रा (१५) स्वाति (१६) विशाखा (१७) अनुराधा (१८) ज्येष्ठा (१९) मूल (२०) पूर्वाषाढ़ा (२१) उत्तराषाढ़ा (२२) अभिजित् (२३) श्रवण (२४) घनिष्ठा (२५) शतभिषा (२६) पूर्वाभाद्रपद (२७) उत्तराभाद्रपद (२८) रेवती

भारतीय महिनों के नाम

चैत्र	( )	वैशाख	( )	ज्येष्ठ	( )	आषाढ़	( )
श्रावण	( )	भाद्रपद	( )	आश्विन	( )	कार्तिक	( )
मार्गशीर्ष	( )	पौष	( )	माघ	( )	फाल्गुन	( )

माह के नाम के आगे ( ) में नक्षत्र का क्रमांक लिख दीजिए।

(उत्तर इसी अंक में)

श्रद्धांजलि

शंकर सुल्तानपुरी नहीं रहे

बाल साहित्य भण्डार को अपने अनवरत लेखन से आजीवन समृद्ध करने वाले एवं बाल साहित्य की समस्त विधाओं में विपुल साहित्य रच कर सैकड़ों कृतियों की अनमोल धरोहर निर्माण करने वाले श्री शंकर सुल्तानपुरी हमसे चिरविदा ले गए। वे देवपुत्र गौरव सम्मान से सर्वप्रथम सम्मानित तीन विभूतियों में एक थे। देवपुत्र अपने इन दिवंगत लेखक को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पिताजी क्यों नही आते?

चित्रकथा
देवांशु वत्स

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

महाराष्ट्र का राज्यवृक्ष

आम

डॉ. परशुराम शुक्ल

मूल वृक्ष यह भारत का है,
भारत माँ ने जाया।
इसके बाद इसे लोगों ने,
दूर देश पहुँचाया।
उगता कहीं उगाया जाता,
लम्बी चौड़ी काया।
ऊँचा पैंतालिस मीटर तक,
देता शीतल छाया।
पन्द्रह सौ से अधिक किस्म के,
ये फल पाये जाते।
लँगड़ा, तोतापरी, दशहरी,
सब पर रोब जमाते।
आम्र वृक्ष की सब शाखाएँ,
काम हवन में आतीं।
और पत्तियाँ इसकी पावन,
वन्दनवार सजातीं।
अपने मीठे फल के कारण,
जग में जाना जाता।
सारे जग में सभी फलों का,
यह राजा कहलाता।

–भोपाल (म.प्र.)

तरह तरह की कविताएं

कविता : डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

सीप किताबें है, कविताएँ मोती हैं,
कविताएं भी तरह -तरह की होती हैं।

कुछ कविताएँ मटक-मटक कर पढ़ते हम,
कुछ कविताएँ अटक-अटक कर पढ़ते हम।
कुछ कविताएँ झूम-झूम हम गाते हैं,
कुछ कविताएँ भूल नहीं हम पाते हैं।

कुछ कविताएँ फूलों पर, गुलदस्तों पर,
कुछ कविताएँ छोटे-मोटे बस्तों पर।
कुछ कविताएँ होली पर, दीवाली पर,
कुछ कविताएँ भैया ईद निराली पर।

कविताओं में सूरज-चंदा-तारे हैं,
कविताओं में खुशियों के फव्वारे हैं।
कविताओं में अंतरिक्ष की बातें हैं,
कविताओं में प्यारे रिश्ते-नाते हैं।

कविताएँ, कविताएँ नहीं खजाना है,
कविताएँ जैसे कोई नजराना है।
कविताओं में हम बच्चों की मस्ती है,
कविताओं में जैसे दुनियाँ बसती है।

ऐसी ही कविताएँ हमको मिला करें,
अगर मिलें ना, तो किससे हम गिला करें?

● शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

रंग भरो

- चाँद मोहम्मद घोसी

● मेड़तासीटी (राज.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

किट्टू की पहल

कहानीः वत्सला चौबे

इन दिनों किट्टू को पीठ और कंधों में लगातार दर्द और सूजन की शिकायत हो रही थी।

कुछ दिनों तक तो उसने सह लिया लेकिन जब पीड़ा सीमा से अधिक हो गई तो उसने अपने माता–पिता को यह बात बताई।

माता पिता को लगा कि शायद किट्टू के ज्यादा खेलने के कारण ऐसा हो रहा है, पर जब पीड़ा सीमा से बढ़ गई तो वे उसे लेकर हड्डी के डॉक्टर के पास पहुँचे।

डॉक्टर ने किट्टू की पीठ का एक्स–रे किया और कहा कि अधिक भार उठाने के कारण पीठ का ऐसा बुरा हाल हुआ है। उन्होंने तीन दिन की दवाई दी साथ ही पूरा विश्राम करने और जाँच के लिए तीन दिन बाद आने के लिए कहा।

दवाइयों के प्रभाव से कष्ट तो ठीक हुआ पर उसकी पीठ थोड़ी सी झुक गई थी। अगले दिन किट्टू की परीक्षा थी, विद्यालय जाना आवश्यक था इसलिए उसके पिताजी ने उसे विद्यालय छोड़ना उचित समझा।

किट्टू की पीठ में पीड़ा थी सो उन्होंने बस्ता उठा लिया। जैसे ही उन्होंने बस्ता उठाया वो सन्न रह गए। उन्हें तुरंत किट्टू की पीड़ा का स्रोत पता चल गया। उन्होंने उसका बस्ता देखा तो उसमें प्रत्येक विषय की दो–दो पुस्तकें और दो–दो कापियों के अलावा प्रोजेक्ट का ढेरों सामान, शब्दकोश, खेल की सामग्री, अल्पाहार का डिब्बा, पानी की बोतल और स्टेशनरी का सामान था। कुल जमा यही कोई नौ दस किलो वजन। वे किट्टू को विद्यालय छोड़ने गए तो सीधे प्राचार्य से मिले और उन्हें इस समस्या से अवगत कराया। प्राचार्य से निवेदन किया कि विद्यालय के और बच्चों की भी ऐसी ही समस्या है, जिसे वे डर के कारण कह नहीं पा रहे हैं। यह एक गंभीर समस्या है जिसका शीघ्रतम समाधान किया जाना आवश्यक है। प्राचार्य जी ने समस्या की गंभीरता को समझते हुए तत्काल एक समिति बनाई जिसमें अभिभावक, डॉक्टर और वे स्वयं थीं। जल्दी ही समिति ने निर्णय लिया कि बच्चों की पुस्तकों का भार उनकी अवस्था और कक्षा के अनुसार किया जाए, स्मार्ट कक्षाए लगाई जाएं, सारी गतिविधियां विद्यालय में ही करवाई जाकर बस्ते का बोझ कम किया जाए।

समिति के सुझावों को उच्च अधिकारियों के पास भेजा गया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और सभी विद्यालयों में लागू करवा दिया। किट्टू की एक पहल से सभी बच्चों को बस्ते के बोझ से मुक्ति मिल गई।

● भोपाल (म.प्र.)

बूझो तो जानें

• राजेश गुजर

बच्चो, कौन सी तितली कौन से फूल पर बैठेगी बताओ?

• महेश्वर (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति।।

सड़क

कविता: अदिति पटेल

तुम बहुत आलसी हो
सदा सोती रहती हो
पर सो कर भी सारी दुनिया का बोझ ढोती रहती हो।
इतनी लंबी हो कि चाँद तक चली जाओ।
सब कहते हैं, यह सड़क आगरा जाती है,
सब कहते हैं यह सड़क पूना को जाती है
पर तुम कहीं नहीं जाती
बस सोए-सोए हमें घर पहुँचाती हो
जब मैं सोचती हूँ कि बस अब तुम खत्म हो जाओ,
मैं घर पहुँच जाऊँ
तो तुम तो रुकने का नाम ही नहीं लेती
बस चलती ही जाती हो।
पर सो कर भी सारी दुनिया का बोझ उठाती हो।

• इन्दौर (म.प्र.)

उदारमन आशा

कहानी : पवन चौहान

नए सत्र में इस बार आठवीं कक्षा में एक नई लड़की का प्रवेश हुआ। लड़की का नाम था आशा। आशा जहाँ समझदार और मिलनसार थी वहीं वह मासूम व पढ़ाई में भी खूब अच्छी थी। आशा के आने से जहाँ पूरी कक्षा प्रसन्न थी वहीं प्राची को बहुत बुरा लग रहा था उसके आने से उसे कक्षा में अपना महत्व कम होता लगने लगा। वैसे प्राची अपनी कक्षा में पढ़ाई में सबसे अच्छी थी। वह कक्षा की प्रतिनिधि थी और सभी उसका कहना भी मानते थे। वह पूरी कक्षा की चहेती थी लेकिन उसका ईर्ष्यालु स्वभाव उसे कई बार अपने मित्रों से दूर भी कर देता था। इस बार भी ऐसा ही हुआ। आशा के अच्छे व्यवहार के कारण सभी लड़कियाँ उसके साथ ही अधिक समय बिताने लगी थी। यह बात प्राची को थोड़ी भी अच्छी नहीं लग रही थी। ईर्ष्यावश प्राची आशा के साथ रहने वाली लड़कियों को बुरा भला कहती रही और जिस कारण सब उसका साथ छोड़ती चली गई। प्राची के साथ अब वे लड़कियाँ थी जो पढ़ाई में कमजोर और स्वभाव से भी बुरी थीं।

आशा प्राची को हर खेल तथा शाला के अन्य क्रियाकलापों में साथ आने के लिए कहती। परन्तु प्राची इसके लिए या तो बिलकुल मना कर देती या कभी बहुत ही अकड़ के साथ सम्मिलित होती। आशा ने कभी भी उसके इन व्यवहारों को बुरा नहीं माना। जब अध्यापक आशा के अच्छे व्यवहार और पढ़ाई की प्रशंसा करते तो प्राची मन ही मन जल उठती।

उसके मन में हमेशा एक ही बात चलती रहती कि वह ऐसा क्या करे कि आशा के साथ रहने वाली सब लड़कियाँ दोबारा उसके पास आ जाए और उसके साथ ही रहे। इसके लिए उसने कई बार सबको टॉफियाँ, चॉकलेट तक बाँटी लेकिन यह युक्ति भी उसकी काम नहीं कर पाई। इनको खाने के बाद सभी आशा के साथ ही हो लेती थीं। कई बार उसने अस्वस्थ होने तक का भी नाटक किया ताकि वह सबकी सहानुभूति बटोर सके। सभी उसका हाल चाल पूछती अवश्य परंतु जैसे ही उन्हें लगता कि प्राची ठीक हो चुकी है वे एक–एक करके फिर आशा के साथ हो लेती। यह सब आशा के मृदु और मिलनसार स्वभाव के कारण था। वह प्राची को हमेशा अपने साथ रखना चाहती थी परंतु प्राची स्वयं ही उससे दूरियाँ बना लेती थी।

जब प्राची का कोई उपाय काम नहीं आया तो उसके साथ रहने वाली सहेलियों ने उसे सुझाव दिया कि आशा को अध्यापकों और सभी विद्यार्थियों की दृष्टि में गिराना होगा। तभी सभी लड़कियाँ उसके पक्ष में होंगी और कक्षा में तुम्हारा ही राज होगा।

यह उपाय प्राची को सबसे अच्छा लगा। उसने इस योजना पर काम करना भी प्रारंभ कर दिया। वह अब हमेशा ऐसे बहाने तलाशती रहती जिससे आशा को अध्यापकों की डांट खानी पड़े और सभी सहपाठियों की दृष्टि में वह एक बुरी लड़की सिद्ध हो सके। कक्षा के सीसीटीवी कैमरे

कई महीनों से खराब चल रहे थे। उसका लाभ प्राची ने यह उठाया कि वह अपनी सहेलियों के साथ मिलकर अपनी कक्षा के बच्चों के बस्तों से चुपचाप उनकी कॉपी, किताब, पेन, पैंसिल आदि निकालती और आशा के बस्ते में डाल देती। ढूँढने पर वे आशा के बस्ते में मिलते तो आशा को बहुत ही आश्चर्य होता। इन घटनाओं के चलते आशा की कुछ सहेलियाँ उससे दूर भी हो गईं। वे अब प्राची के साथ थीं।

इन व्यवहारों को करते हुए प्राची ने अपने स्वभाव में एक बदलाव यह ला दिया था कि वह अब आशा के बहुत निकट और स्नेह से रहने लगी थी। ताकि आशा को इन व्यवहारों से प्राची पर थोड़ा भी शक न हो।

इस दौरान शैक्षणिक सत्र की तिमाही परीक्षाएं भी हो चुकी थीं। जब परीक्षा परिणाम आया तो आशा ने हर विषय में अच्छे अंक लिए और कक्षा में प्रथम रही। आज कक्षा अध्यापिका ने आशा को कक्षा का प्रतिनिधि भी बना दिया था। प्राची इस बात को लेकर और भी चिंतित हो गई। इस बार वह पांचवे स्थान पर थी। यह सब प्राची का नकारात्मक गतिविधियों में ही उलझे रहने के कारण हुआ था। उसका परीक्षा परिणाम आज तक कभी इतना बुरा नहीं रहा था। वह आज बहुत उदास थी।

आशा ने प्राची को अपने पास बिठाकर समझाया, कोई बात नहीं प्राची। अगली परीक्षाओं में अधिक परिश्रम करना और देखना तुम सबसे अधिक अंक प्राप्त करोगी।

लेकिन प्राची कहाँ समझने वाली थी। अबकी बार तो उसके मस्तिष्क में कुछ और ही चल रहा था। जब विज्ञान अध्यापिका प्रयोग शाला में लड़कियों को प्रयोग करवा रही थी तो उसने अध्यापिका का मोबाइल निकाला और आशा के बस्ते के अंदर रख दिया। शाला में इस घटना का खूब हल्ला पड़ा। ढूँढने पर जब मोबाइल आशा के बस्ते में से मिला तो उसे प्रधानाचार्य के कार्यालय में उपस्थित होना पड़ा। आशा इस चोरी के लिए मना करती रही लेकिन सारे प्रमाण उसके विरुद्ध थे। वह असहाय सी होकर रह गई थी। प्रधानाचार्य ने उसे इस काम के लिए अंतिम चेतावनी देते हुए कहा, तुम इस शाला की होनहार विद्यार्थी हो। इसलिए तुम्हे एक अवसर और दे रहा हूँ। यदि दोबारा ऐसी कोई बात मेरे सामने आई तो तुम्हें शाला से तुरंत निकाल दिया जाएगा।

वह कार्यालय से आकर चुपचाप कक्षा में अपने स्थान पर बैठ चुकी थी। इस समय कक्षा में हिन्दी की अध्यापिका कक्षा को पढ़ा रही थी। आशा का ध्यान कक्षा में जरा भी नहीं था। उसे बार-बार प्रधानाचार्य के ही शब्द सुनाई पड़ रहे थे- ''यदि दोबारा ऐसी कोई बात मेरे सामने आई तो तुम्हे शाला से तुरंत निकाल दिया जाएगा।''

उसे समझ नहीं आ रहा था कि कोई क्यों उसके साथ इस तरह की शरारत कर रहा है। हिन्दी की अध्यापिका की दृष्टि उदास आशा पर बराबर बनी हुई थी। मध्यावकाश की घंटी बजते ही सब लड़कियाँ कक्षा से बाहर निकल गई। लेकिन उसकी कुछ सहेलियाँ कार्यालय की बात का पता करने उसके पास आ चुकी थी। आशा एक मूर्ति सी बनी अपनी जगह पर बैठी हुई थी। हिन्दी अध्यापिका आशा के पास आई और सांत्वना देते हुए उसे सतर्क रहने की बात की। आशा की आँखें भर आई। कई दिनों से सबकी चीजें मेरे ही बस्ते में मिल रही हैं और मुझे चोर ठहराया जा रहा है।

जब प्राची को पता चला कि प्रधानाचार्य ने आशा को

अंतिम चेतावनी दी है तो उसने इसका लाभ उठाने की सोची। आशा पर यह उसका अंतिम वार था। उसने इस बार संस्कृत अध्यापिका के बटुए से रुपये निकालकर एक बार फिर से आशा के बस्ते में रख दिए।

छानबीन होने पर रुपये फिर से आशा के बस्ते में पाए गए। परन्तु इस बार अकेली आशा को नहीं बल्कि प्राची को भी प्रधानाचार्य के कार्यालय में बुलाया गया। कार्यालय में प्रधानाचार्य के अलावा विज्ञान, हिन्दी और संस्कृत की अध्यापिकाएं भी मौजूद थीं।

''आशा बताओ, तुम चोरी क्यों करती हो?'' हिन्दी अध्यापिका ने पूछा।

इस बात पर आशा की आँखों से आँसू झरने लगे। वह रोते हुए बोली, ''नहीं दीदी! मैंने आज तक कोई चोरी नहीं की। मेरे साथ पता नहीं कौन ये शरारतें कर रहा है?''

यह देखकर प्राची के मुख पर कुटिल हँसी तैरने लगी थी।

अब अध्यापिका का अगला प्रश्न प्राची से था, 'प्राची, मैं सही कर रही हूँ न! आशा ही सबकी वस्तुएं चुराती हैं न।'

'जी हाँ दीदी! आप सही कह रही है। जब से यह लड़की हमारी कक्षा में आई है। यहाँ का वातावरण ही बदल गया है। अब तो यह चोरियाँ भी करने लगी हैं। प्राची को जैसे पूरा अवसर मिल चुका था।

आशा को प्राची द्वारा कही जा रही इन बातों को सुनकर एक विचित्र सी बेचैनी हो रही थी। उसे प्राची से यह अपेक्षा न थी। उसका मुखड़ा और उदास हो चुका था। लेकिन अबकी बार वह जोर से चिल्लाई, 'मैंने कोई चोरी नहीं की है। आप सभी मुझ पर अनुचित आरोप लगा रहे हैं। मेरी बात को कोई क्यों नहीं मान रहा है।'

प्रधानाचार्य सारी बातें चुपचाप सुन रहे थे। तभी विज्ञान अध्यापिका प्रधानाचार्य से बोली, ''श्रीमान! हमें आठवी में कुछ गड़बड़ की आशंका लग रही थी। इसलिए हमने आठवीं के कमरे का विडियो कैमरा दो दिन पहले ही ठीक करवा दिया था। उसमें कुछ विडियो रिकार्डिंग हमने देखी है। आप भी देख लें। सच्चाई पता चल जाएगी।'

यह बात सुनकर प्राची के चेहरे की हवाईयाँ उड़ चुकी थी। कार्यालय में उपस्थित सभी ने विडियो क्लीपिंग देखी तो वे अवाक् रह गए। विडियो में प्राची ही अध्यापिका तथा बच्चों के बस्ते से सामान निकालकर आशा के बस्ते में रख रही थी।

प्राची का यह काम देखकर आशा को बहुत क्रोध आ रहा था, परंतु वह कुछ नहीं बोली। सन्न सी अपने स्थान पर खड़ी रही।

प्रधानाचार्य के सामने सच्चाई आ चुकी थी। इस घटिया काम और ऐसे षडयंत्र के लिए प्रधानाचार्य ने प्राची को शाला से निकालने का निर्णय सुना दिया था।

प्राची की आँखों से आँसू बह निकले थे। परंतु मासूस आशा प्रधानाचार्य जी से निवेदन करते हुए बोली, ''आचार्य जी! प्राची को क्षमा कर दें। वह आगे से ऐसा काम नहीं करेगी। प्राची एक अच्छी लड़की है।''

आशा के इस व्यवहार को देखकर प्राची को खूब रोना आ रहा था। आशा के लिए उसके मन में जमा सारा मैल बह चुका था। वह आशा से क्षमा मांगते हुए जोर-जोर से रो पड़ी थी, ''आशु! मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हे हर समय गलत समझा।''

भोली आशा ने प्राची को प्रेम से गले लगा लिया। प्रधानाचार्य और सभी अध्यापिकाएँ आशा की उदारता को देखकर अभिभूत थे।

● **महादेव (हि.प्र.)**

सही उत्तर

महिनों के नामकरण – चैत्र (१४), वैशाख (१६), ज्येष्ठ (१८), आषाढ़ (२०), श्रावण (२३), भाद्रपद (२६) आश्विन (०१), कार्तिक (०३), मार्गशीर्ष (०५), पौष (०८), माघ (१०), फाल्गुन (११)

पहेलियाँ – (१) श्रीगणेश (२) प्रह्लाद (३) हनुमान (४) लव-कुश

बच्चों की बात

कविता : आचार्य बलवंत

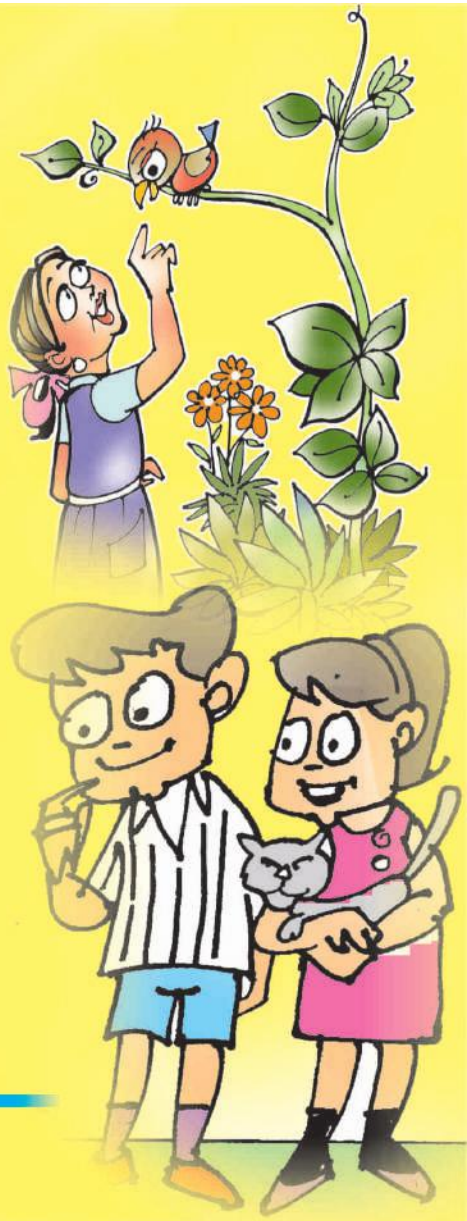

बच्चों की है बात निराली।

तन के सुंदर, मन के सच्चे
सबको लगते प्यारे बच्चे
सूरत इनकी भोली-भाली।
बच्चों की है बात निराली।

इनसे घर आँगन सजता है
इनसे घर, घर-सा लगता है
इनसे घर आती खुशहाली।
बच्चों की है बात निराली।

चाहे जो भी हो मजबूरी
इनकी माँगे होती पूरी
इनके वचन न जाएँ खाली।
बच्चों की है बात निराली।

मन में कोमल आशा लेकर
जीवन की अभिलाषा लेकर
करते सपनों की रखवाली।
बच्चों की है बात निराली।

● बेंगलुरु (कर्नाटक)

चुटकुले

– ऋषिमोहन श्रीवास्तव

मकान मालिक – कहिए श्रीमान्, मकान आपको पसंद आया? पर आपको इस मकान के लिए सज्जन होना बहुत जरूरी है।

किराएदार – यह तो आपको उसी दिन पता चलेगा जब आप मुझसे मकान का किराया मांगने आयेंगे।

****

एक आदमी (भिखारी से)– तुम भीख मांग कर अपना पेट भरते हो, कहीं कुछ काम क्यों नहीं करते।

भिखारी – काम किसलिए? क्या अपने जैसे बेकार आदमी का पेट भरने के लिए?

****

एक व्यक्ति (भिखारी से) तुम तो पहले अंधे होकर भीख मांगते थे आजकल लंगड़े बनकर मांगते हो?

भिखारी – क्या करूँ साहब! जब मैं अंधा था तो लोग खोटे सिक्के मेरे कटोरे में डाल जाते थे।

● ग्वालियर (म.प्र.)

मूर्ख कौन?

चित्रकथा - **संकेत गोस्वामी**

नहीं, मुझे दो सौ रूपये चाहिएं, वही लूंगा.
जैसी तुम्हारी मर्जी..
मैं तो चला..सौदा करते तो तुम्हें अपनी जरूरत के लिए रूपया मिल जाता.
लेकिन जरा सा घूमकर थोड़ी ही देर में सुनार वापस वहां लौट आया-
..ये लो भाई, दो सौ रूपये ही रखो मैंने सोचा तुम्हारी मदद हो जाएगी.
माफ करना..
तीन सौ रूपयों के बदले मैंने वह चमकीला पत्थर किसी और को बेच दिया..
क्या ?!! बेच दिया?

तुम मूर्ख हो .., वह हीरा था और कम से कम एक लाख से ज्यादा का...
सेठजी, मैं मूर्ख नहीं हूं मुझे क्या पता था वो हीरा है..
फिर भी सौदा करते समय मैंने दो सौ रूपयों की जरूरत पर तीन सौ रूपये हासिल कर लिए..
लेकिन तुम तो हीरे को देखकर उसकी कीमत जान गए थे..
..फिर भी लाख रूपये की चीज दो सौ रूपयों में ना खरीद सके.
मूर्ख तुम हुए.
सच कहा तुमने
समाप्त

सड़क के नियम

कविताः अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

शहरों में हर चौराहे पर
क्यों जलती, बुझती बत्ती।
आओ! तुम्हें बतायें क्यों
सड़कों पर बनी हुयी पट्टी।
लाल बत्ती दिखे सड़क पर
समझो वहीं ठहरना है,
पीली पर तैयार हो जाओ
हरी हुई तो चलना है।

भीड़, भड़क्का देख सड़क पर
तनिक नहीं घबराना है।
बायें वाली पटरी -पटरी
आगे चलते जाना है।
सड़क पार करनी हो तो
जल्दीबाजी का काम नहीं।
देखो, पट्टी जहाँ बनी हो
पार सड़क को करो वहीं।

अगर मोड़ पर मुड़ना हो तो
एकाएक नहीं जाना।
पहले ठहरो, पीछे देखो
फिर धीरे से मुड़ जाना।
अगर नियम से सभी चलें
तो दुर्घटना क्यों घटे भला।
बात पते की यही, सड़क पर
चलना भी है एक कला।

● लखनऊ (उ.प्र.)

पढ़ने का उपाय

चित्रकथा - देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

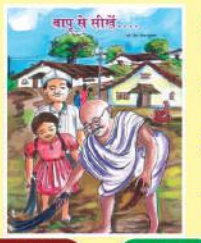

बापू से सीखें– महात्मा गांधी के जीवन से बच्चों को प्रेरित करने वाली १५ बाल कविताओं का संकलन।

रचनाकार– डॉ. वेदमित्र शुक्ल 'मयंक'

प्रकाशन– विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, संस्कृति भवन, सालारपुर रोड़, कुरूक्षेत्र (हरि.) १३६११८

मूल्य ३५/- पृष्ठ २०

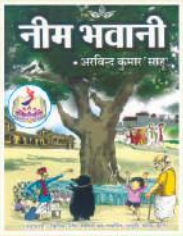

नीम भवानी– औषधीय गुणों से भरपूर पर्यावरण हितैषी नीम के वृक्ष से जुड़े अनेक आयामों को सुरुचिपूर्ण कविता में व्यक्त करती काव्य कृति।

रचनाकार– अरविन्द कुमार साहू

प्रकाशन– एंजेल बुक्स, अकोढिया रोड़, ऊँचाहार, रायबरेली २२९४४० (उ.प्र.)

मूल्य २००/- पृष्ठ ८७

परियों का पेड़– उत्सुकता जगाने वाली सतरंगी कल्पनाओं से भरपूर रोचक कथानक से गुंथा बाल उपन्यास।

रचनाकार– अरविन्द कुमार साहू

प्रकाशन– एंजेल बुक्स, अकोढिया रोड़, ऊँचाहार, रायबरेली २२९४४० (उ.प्र.)

मूल्य २००/- पृष्ठ १०९

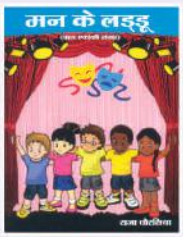

मन के लड्डू– बाल वर्ग की विकृतियों और विडम्बनाओं को रसीले अंदाज में बच्चों की ही भाषा में अभिव्यक्त करते दस रोचक बाल एकांकी।

रचनाकार– राजा चौरसिया

प्रकाशन– रुचिर संस्कार, त्रिपुरी चौक, गढ़ा जबलपुर (म.प्र.)

मूल्य ७५/- पृष्ठ ५६

बच्चों की दुनिया– बच्चों की मनोवैज्ञानिक धरा पर रची विविध विषयों पर रसभरी ३९ बाल कविताएँ।

रचनाकार– बाबूलाल परमार

प्रकाशन– गुरुवारीय समन्वय सत्संग, गुरुआश्रम, रावटी, जिला रतलाम ४५७७६९ (म.प्र.)

पृष्ठ ५०

रंग भरो

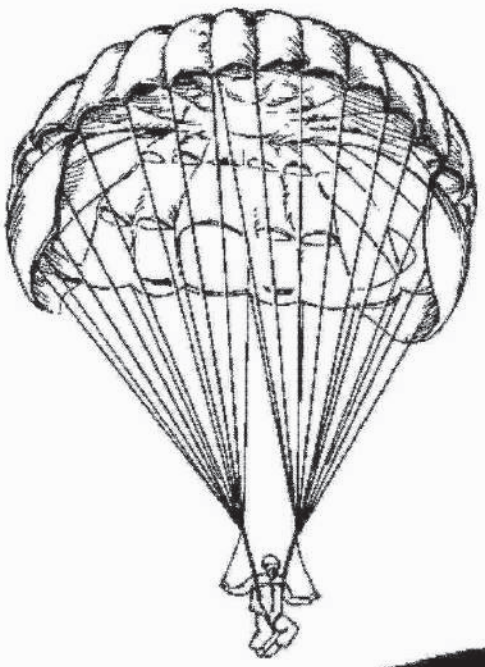

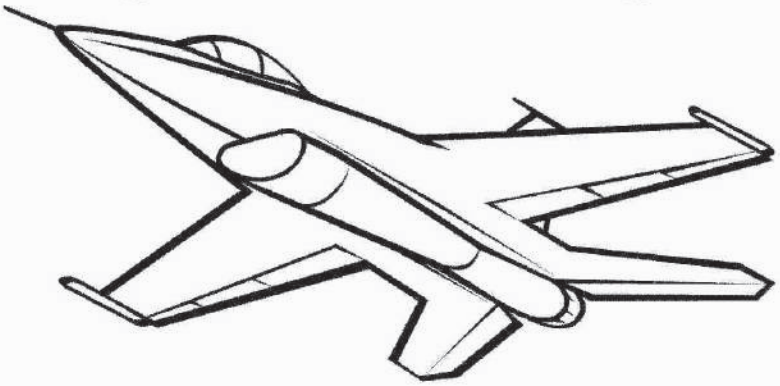

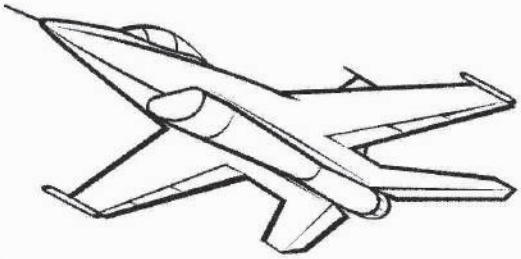

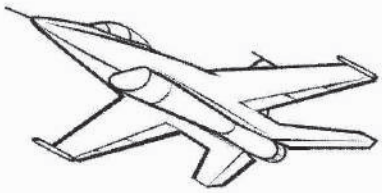

पृथ्वी दिवस

चित्रकथा
देवांशु वत्स

मीठी सौगात

कविता : डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी

हैं गन्ने के बेटे गुड़
बस मिठास ही देते गुड़।

महक मिली है माटी की
मेहनत की परिपाटी की
पसर रही है सोंधी-सोंधी
गंध खेत की, घाटी की

जाते जन-जीवन से जुड़
हैं गन्ने के बेटे गुड़।

रवादार, मीठा है स्वाद
आती देख गाँव की याद
ईख से बनता है कच्चा रस
कच्चे रस की उबले पाग

सबके बड़े चहेते गुड़
बस मिठास ही देते गुड़।

चीनी में वह बात कहाँ
खुशबू की वह प्रात कहाँ
गुड़, शीतल जल में मिठास जो
वह मीठी सौगात कहाँ।

मोह दिलों को लेते गुड़
बस मिठास ही देते गुड़।

● पटना (बिहार)

समाचार

डॉ. कृपाशंकर शर्मा को साहित्य सम्मान से सम्मानित

जयपुर। अनुभूति साहित्यक संस्था, जयपुर के महासचिव श्री के.एस. शर्मा द्वारा अवगत कराया गया है कि राजस्थान राज्य के वरिष्ठ गीतकार, साहित्यकार एवं लेखक डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक' को २० नवम्बर २०१८ को अखिल हिन्दी साहित्य सभा (अहिसास) नासिक, (महाराष्ट्र) द्वारा साहित्य साधना सम्मान से सम्मानित किया गया है। उल्लेखनीय है कि श्री अचूक को काव्य कलश, इन्दौर द्वारा विशिष्ट सम्मान, सीताराम गुप्त बाल साहित्य का सम्मान, जयपुर (राज.) द्वारा विशिष्ट बाल रचनाओं के लिए प्रदान किया गया है।

विद्या भारती अ. भा. शिक्षा संस्थान, सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा के मार्गदर्शन एवं भारतीय आदर्श शिक्षण समिति, मन्दसौर द्वारा संचालित

सरस्वती विद्या मन्दिर सीबीएसई उ. मा. वि.

Affiliated to C.B.S.E. (Affiliation No. : 1030696)

www.saraswatividyamandir.in

आवासीय विद्यालय Residential School

सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान, संजीत मार्ग, मन्दसौर (म. प्र.)

छात्रावास (Hostel) में कक्षा 6 से 12 तक के 300 भैयाओं हेतु आवास, भोजन, शिक्षण एवं कोचिंग की उत्तम व्यवस्था ।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (C.B.S.E.) नई दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल म. प्र. भोपाल द्वारा मान्यता प्राप्त पृथक-पृथक विद्यालय

सम्पर्क करें – Mob. : अधीक्षक : 89896-04188, 70244-40312, प्राचार्य : 88713-52921, प्रबंधक : 97522-54195

E-mail : svm.cbse.mds.1314@gmail.com

विशेषताएँ -

1. आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित आवासीय भवन।
2. वाचनालय, पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर शिक्षा।
3. शत् प्रतिशत, गुणात्मक परीक्षा परिणाम।
4. SPOKEN ENGLISH की नियमित कक्षाऐं।
5. अभिभावक सम्मेलन, शारीरिक प्रदर्शन व विशिष्ट रंगमंचीय कार्यक्रम।
6. अलमारी, टेबल-कुर्सी, ट्रेक सूट, स्कूल बेग, स्पोर्ट शूज, बिस्तर, कोचिंग एवं शैक्षणिक भ्रमण (भारत दर्शन) की निःशुल्क सुविधा।

Admission Open

Class : 6th to 12th (Maths, Bio., Comm. & Agri.)

प्रवेश प्रारम्भ

अशोक पारिख	प्रमोद अरवंदेकर	महादेव यादव	भारतसिंह बोराना	राघवेन्द्र देराश्री	महेश वप्ता
अध्यक्ष	सचिव	प्रबंधक	छात्रावास अधीक्षक	प्राचार्य CBSE Board	प्राचार्य State Board

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०३/२०१९ | प्रेषण तिथि ३०/०३/२०१९ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

Queens' College

Girls' Residential School in Indore from Classes III to XII

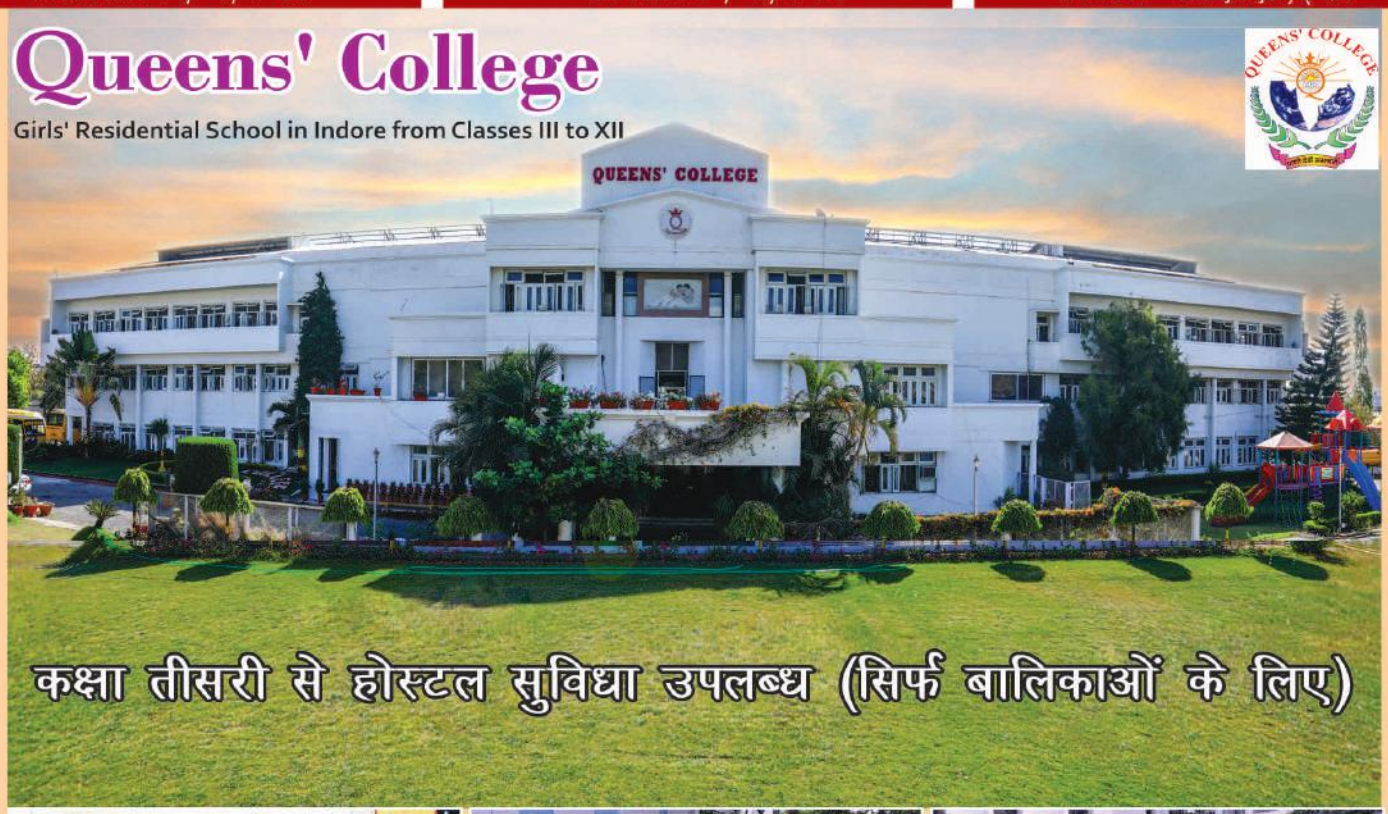

कक्षा तीसरी से होस्टल सुविधा उपलब्ध (सिर्फ बालिकाओं के लिए)

- **Ranked no. 1 in Indore (M.P.), Ranked no.2 in India's Top Five Girls Boarding school by Education Today 2017.**
- **Ranked as the 2nd best Girls School in M.P. by Education World Survey.**
- **"CBSE New Generation School" Certified by CBSE New Delhi.**

● Swimming Pool of National Standards	● Modern sports facilities available
● Sprawling Campus	● Compulsory Computer Education
● Student - Teacher Ratio 1:30	● Special remedial and enrichment classes
● Extra & competitive exam coaching facility available	● Healthy and Nutritious Food
● Smart Digital Classrooms	● Highly Qualified Faculty
● Variety of subjects available for +2 classes	● Spacious dormitories with all amenities
● Well Equiped Laboratories	● Enriched Library

Khandwa Road, Indore (M.P.) 452017, Contact No.: 0731-2877777-66-55
Visit us at: www.queenscollegeindore.org, E-mail: queenscollegeindore@rediffmail.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना